2025

तू मरेगा तभी तो तरेगा

Parmatmana buddha

The Parmatmana World

1/1/2025

तू मरेगा तभी तो तरेगा

बुद्धत्तव, जागरण, प्रज्ञा, बोध, प्रबुद्ध, ज्ञान प्राप्ति का द्वार!

अहंकार की मृत्यु ही आत्मा की मुक्ति है। तू जितना भीतर जाएगा, उतना ही ऊपर उठेगा।

हर उत्तर किताब में नहीं होता, कुछ उत्तर तुम्हारी मरी हुई आवाज में छिपे हैं।

इस ग्रन्थ का 40 दिनों तक लगातार मनन करने से पाठक सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है ऐसा बुद्धजनों का, सत्य को पाएं हुए संतो का मत है। और उस अवस्था का नाम है

बुद्धत्व, प्रज्ञा, जागरण, बोध, प्रबुद्ध, ज्ञान!

जिस किसी ने भी इस ग्रन्थ का पाठ किया, जीवन में इसे धारण किया तथा समाज में इसका वितरण किया उन सभी के मन मे स्वतः ही करुणा का उदय हो गया। आप सभी से अनुरोध है कि नित्य प्रातः इस ग्रन्थ का पाठ करें तथा दूसरो को भी इस ग्रन्थ को पढ़ने में सहयोग करें।

"क्या तुम तैयार हो? तो पहला पन्ना पलटिए और यात्रा शुरु कीजिए"।

पुस्तक का नाम तू मरेगा तभी तो तरेगा

संस्करण प्रथम संस्करण 2025

प्रकाशक परमात्मना फाउन्डेश्न

मुद्रक ....

स्थान दिल्ली

कापीराइट लेखकाधीन सभी अधिकार सुरक्षित

"बिना अनुमति इस पुस्तक के किसी भी भाग का पुनप्रकाशन, छपाई, अथवा डिजिटलीकरण अवैध होगा"।

parmatmana
the ultimate wisdom

लेखक परमात्मना बुद्ध

मूल्य ₹ 1000.00

प्रकाशन वर्ष जुलाई 2025

प्रस्तावना

"तू मरेगा तभी तो तरेगा" कोई साधारण वाक्य नहीं, अपितु आत्मजागृति की उस अग्नि की चिंगारी है जो मनुष्य को उसकी नींद से जगा सकती है। यह पुस्तक एक आध्यात्मिक संवाद का दस्तावेज है। एक योद्धा और परमात्मा के बीच। प्रश्न साधारण लग सकते हैं, पर उत्तर हमें हमारी अंर्तमन की गहराई में ले जाते हैं। एक ऐसी बातचीत जो मनुष्य के सबसे मूल प्रश्नों का उत्तर खोजती है।

मैं कौन हूँ, ईश्वर क्या है, धर्म क्या है, जीवन का उद्देश्य क्या है, तथा मुक्ति किसे कहते हैं? पाठकों के समक्ष प्रस्तुत यह प्रश्नोत्तर शैली का संग्रह, केवल वैचारिक या धार्मिक नहीं, बल्कि आंतरिक अनुभव और स्वयं की पहचान की ओर बढ़ता एक मार्ग है। धर्म क्या है? सत्य क्या है? आत्मा, मोक्ष, परमात्मा, जागरूकता यह सब केवल शब्द नहीं हैं, यह अनुभव के आयाम हैं, जो इस पुस्तक में सहज भाव से प्रकट हुए हैं।

parmatmana
the ultimate wisdom

इसमें कोई विशेष सम्प्रदाय, परंपरा या विचारधारा का प्रचार नहीं किया गया है, बल्कि जीवन की सर्वसामान्य और सार्वकालिक सच्चाइयों की खोज की गई है। यह संवाद स्वयं और परम सत्य के बीच की दूरी को मिटाने की चेष्टा है। यह उस यात्रा का प्रारंभ है जहाँ विचार मौन में विलीन होते हैं और आत्मा स्वयं को पहचानने लगती है। लेखक द्वारा पूछे गए प्रश्न हम सभी के अपने भीतर के प्रश्न हो सकते हैं। और जो उत्तर हैं वे केवल शब्द नहीं, अनुभव हैं।

यह पुस्तक न किसी पंथ की है, न किसी संप्रदाय की। यह आपकी है। यदि आप खोज में हैं। यदि आपके भीतर भी कोई मौन प्रश्न है, तो यह पुस्तक उसका उत्तर देने में समर्थ है।

यह पुस्तक उन सभी साधकों के लिए समर्पित है जो अपने जीवन में सच्चाई, प्रेम, शांति और मुक्ति को पाना चाहते हैं। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि आप किसी मत को स्वीकार करें, बल्कि यह है कि आप अपने भीतर झांकें, स्वयं को पहचानें और उस दिव्य चेतना से जुड़ें जो हमेशा से ही आपके साथ है।

"तू मरेगा तभी तो तरेगा" इस एक वाक्य में ही सम्पूर्ण साधना, सम्पूर्ण जागरण और सम्पूर्ण धर्म समाया हुआ है।

यह पुस्तक आध्यात्मिक साधकों के लिए दीपक बनें यही शुभकामना है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - धर्म क्या है?

भगवान - केवल तुम्हारे हृदय में संसार मात्र के लिए प्रेम।

योद्धाः - क्या हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन होना धर्म नही होता?

भगवान - अगर यही धर्म होता तो बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर क्या खोज रहें थें? जन्म से धर्म नही मिलता। धर्म ठोकरें खाकर पैदा करना पड़ता है।

योद्धाः - तो धर्म कैसा होना चाहिए?

भगवान - **जीता जागता!** जो तुम्हें आज सुखी करे न कि मरने के बाद स्वर्ग पहुचाएं। क्योंकि मरने के बाद की कल्पना ही पाखण्डवाद है।

योद्धाः - क्या धर्म जन्म से होता है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - **नहीं!** जन्म से ही तुम्हारी आंखो पर धर्म की अंध विश्वास रुपी पट्टी बांध दी जाती है। लेकिन कोई-कोई विरला, पागल, दिवाना, मस्ताना गलती से अपनी आंखो पर से पट्टी उतार देता है। और वो ही गलती से धार्मिक हो पाता है।

योद्धाः - क्या शूद्र अछूत होता है?

भगवान - अछूत तो केवल परमात्मा है। तुम्हारे भेदभाव करने वाले समाज ने ये ठीकरा शूद्रों पर मढ़ दिया। अछूत यानि जिसे छुआ ही न जा सके। **"यानी परमात्मा, खुदा अछूत है"।**

योद्धाः - किताबों का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता?

भगवान - कागज पर लिखा हुआ सोना **"सोना"** नहीं होता।

योद्धाः - सत्य क्या है?

भगवान - तुम्हारा होना ही सत्य है और बाकि सभी असत्य।

योद्धाः - आत्मज्ञान क्या है?

भगवान - स्वयं को पहचानना।

योद्धाः - बुद्धत्व किसे कहते है?

भगवान - **आँखों का खुल जाना।** और इसका बौद्ध धर्म से या अन्य किसी भी धर्म से कुछ भी लेना-देना नही है।

योद्धाः - आत्म अनुभूति कैसे होती है?

भगवान - मैं के मरने के बाद, अहंकार के तिरोहित होने के बाद। लेकिन ध्यान से अपनी मैं को मारना! क्योंकि मुर्दा बोला नही करते। एक बार अगर तुम मर गए तो वहा हिन्दु-मुस्लिम भी नही बचेगा।

योद्धाः - क्या राम-कृष्ण इस धरती पर हुए?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - राम-कृष्ण, बुद्ध-महावीर, नानक-कबीर, मोहम्मद -जीसस आदि महापुरुष इस धरती पर हुए या नहीं इससे तुम्हें कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। क्योंकि जब यह रहे तब क्या संसार धार्मिक बन पाया था? क्या उस समय तुम धार्मिक थे?

योद्धाः - धर्म की खोज से क्या लाभ होता है?

भगवान - **कुछ भी नहीं!** बस तुम शांत होकर बैठ जाते हो और सारी दौड़े समाप्त हो जाती है। स्वयं पर द्रष्टि दौड़ाए कि अगर आपकी धर्म की खोज पूरी हो गई है तो क्या आप शांत हो गए है।

योद्धाः - भीतर के दीपक से क्या तात्पर्य है? वो कैसे जलता है?

भगवान - भीतर के दीपक से तात्पर्य होता है स्वयं का ज्ञान। और यह तब प्रकट होता है जब तुम यह मान लेते हो कि तुम अज्ञानता में हो, अंधकार में हो।

योद्धाः - हम कहाँ से आते है और कहाँ जाते है?

भगवान - एक दीपक जलाओं और ध्यान से देखो कि ज्योति कहाँ से आती है और अब इस दीपक को बुझाओं और देखो कि ज्योति कहाँ जाती है।

parmatma
the ultimate wisdom

योद्धाः - स्वस्थ या बीमार बच्चे के जन्म के पीछे क्या कारण है एक धार्मिक मत के अनुसार वो पिछले जन्मों के लेनदेन के कारण आता है क्या यह सही है?

भगवान - नहीं! यहां संसार में भी फसल आदि का बीजारोपड़ का एक निश्चित समय होता है अगर उससे आगे-पीछे बीज धरती में डालोगें तो फसल अच्छी नहीं आएगी। उसी प्रकार बच्चें के पैदा करने के बीज का सही समय रात 10 से 12 बजे के बीच होता है इसके अलावा गलत समय में अगर बीज डालोगें तो बच्चें बीमार, विक्लांग, या मंद बुद्धि आदि ही पैदा होगें। और

हमारे देश में पति-पत्नी के मिलन को प्रेम की द्रष्टि से न देखकर काम यानी गलत कृत्य की द्रष्टि से देखने को कहा गया है इसी कारण जब पति-पत्नी प्रेम मग्न होते है तो उनके मन में प्रेम या पुण्य की सोच न होकर पाप या गलत काम की सोच ही होती है इसी सोच के कारण बच्चा मानसिक या शारीरिक बीमार पैदा होता है। यह विज्ञान है कोई धार्मिक कृत्य नहीं। लेकिन जिसे कुछ नहीं पता वो सभी पिछले जन्मों पर टालता है।

योद्धाः - आज संसार में कौन व्यक्ति है जो महात्मा या संत है।

भगवान - बहुत है लेकिन धार्मिक वस्त्र पहने, पीले, नीले कपड़े पहने, तिलक लगा आगे आगे पीछे हिटलर की तरह कैमरे का फौज फांटा लेकर वाक करते नहीं दिखेंगे। वो संत या महात्मा तुम्हे काम धंधा करता मिलेगा। पत्नी बच्चों के साथ रहता मिलेगा। तुम उसे पहचान नहीं पाओगे। क्योंकि तुम तो ढोंगी को ही महात्मा मानते आए हो। धार्मिक हो ना! धार्मिक दिखने वाला व्यक्ति आँख का अंधा होता ही है। मुस्लिम आदमी, एक मुसलमान के ढोंगी को ही महात्मा मानता है। सिख व्यक्ति सिख के वस्त्र पहनने वाले को ही महात्मा मानता है, बौद्ध भी अपनी सोच के प्रकार के वस्त्र वाले को ही महात्मा मानता है। सभी का तो ये हाल है। **"और हमारे देश का तो दुर्भाग्य ही यह है कि यहां के तो राजनेता भी आंख का अंधें है"।**

योद्धाः - आध्यात्मिक गुरु की पहचान कैसे करें?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - गुरु को जब तक एक व्यक्ति मानते रहोगे तब तक भटकते रहोगे। तुम्हें गुरु की आवश्यकता नहीं है तुम्हे शिष्य होने की आवश्यकता है। तुम शिष्य हो जाओ पूरा अस्तित्व ही गुरु है। और जब तुम पूरे अस्तित्व से कुछ सीखने की अभिलाषा रखोगे तभी कुछ सीख पाओगे।

योद्धाः - मैंने इतना जप किया, तीर्थ किया कुछ तो लाभ होगा?

भगवान - तुमने भ्रम में भ्रम टूटने का स्वप्न देख लिया होगा? इसे कहते है स्वप्न में नींद से उठ जाने का स्वप्न देखना। लाभ की बात करते हो तुम! उल्टा भेड़ो की भीड़ से इतना घिर गए हो कि बाहर निकलना भी चाहो तो तुम निकल ना पाओगे।

योद्धाः - आत्मा का आकार कैसा है और यह मात्र् के गर्भ में कब प्रवेश करती है?

भगवान - विराट! और आत्मा कही भी आती जाती नहीं तो प्रवेश करने और निकलने का मतलब ही नहीं।

योद्धाः - ईश्वर है या नहीं?

भगवान - ये प्रश्न ही तुम्हे उन मूढ़ो ने सिखाया है जिन्होंने झूठे ईश्वर गढ़े है। मुझसे तो ये पूछो कि क्या मैं ईश्वर हो सकता हूँ?

योद्धाः - ध्यान क्या है?

भगवान - तुम्हारे विचार मुक्त होने की कला। तुम्हारे अन्नत ब्रह्माण्ड् में उड़ने की कला।

parmatmana the ultimate wisdom

योद्धाः - हम अध्यात्म में ऊपर कैसे उठे?

भगवान - पंख लगाकर। और पंख तो तुम लेकर ही पैदा हुए हो। मैं तो तुम्हे पंख फडफड़ाना ही सीखाता हूँ फिर उड़ तो तुम स्वयं ही सकते हो।

योद्धाः - मुक्त कौन है?

भगवान - वो जो सारे बन्धन तोड़ सके और इसमें तुम्हारे धर्म के बन्धन भी आते है।

योद्धाः - बिना भगवान के कैसा धर्म?

भगवान - धार्मिक होने के लिए भगवान की जरुरत नहीं बल्कि तुम्हारे भक्त होने की जरूरत है। भगवान, परमात्मा, खुदा तो कण-कण में व्याप्त है उसे तुम खो ही नहीं सकते।

योद्धाः - तुम्हारा मार्ग क्या बुद्ध या गीता का मार्ग है?

भगवान - नही। मेरा मार्ग तो मेरा मार्ग है वह न तो बुद्ध का मार्ग है और न ही महावीर का, न हिन्दू का, न मुस्लिम का, न सिख का, न ईसाई का। **"केवल देखो मेरी मस्ती को और जियो मेरी तरह"।**

योद्धाः - विराट कैसा दिखता है?

भगवान - आखें बंद करो और देख लो मेरी विराटता। बस बिलकुल ऐसा ही दिखता है विराट।

योद्धाः - अमीर-गरीब क्या प्रारब्ध कर्मो के कारण बनता है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - **नही!** यहां कभी कोई भी वस्तु दुबारा नही होती। एक पत्ता भी दुबारा नहीं होता तो मनुष्य कहां से दोबारा होगा। उन्होंने कुछ न करने की अवधारणा पाली है और जो आलसी है जीवन को बदलना नहीं चाहते है वो ऐसी मूर्खता भरी सोच पाल लेते है। और वो सभी धर्म गुरु जो भोली-भाली जनता से पुण्य कर्मो के नाम पर दान लेना चाहते है वो सभी अगले जन्मों में तुम्हारा प्रारब्ध ठीक बने उसी मूर्खता के कारण ऐसी धारणाओं की कहानियां रच देतें है।

योद्धाः - समाधी का अनुभव कहां होता है?

भगवान - जहाँ तुम्हारी मैं गिरती है।

योद्धाः - इस लोक से उस लोक जाने के लिए कौन सा सेतु है?

भगवान - **किसी जिन्दा बुद्ध के सिर के ऊपर पाँव रखकर ही तुम उस पार जा सकोगे।**

योद्धाः - ईश्वर, परमात्मा, खुदा, अल्लाह होता है क्या?

भगवान - **हाँ!** और यह सभी तुम्हारें ही जीवन के प्रर्यायवाची नाम है। यानी तुम्हारा ही दूसरा नाम अल्लाह है।

योद्धाः - अब भविष्य में करोड़ों दीपक जलेंगे इसका क्या मतलब है?

भगवान - **जब भी कोई एक बुद्ध होता है तो वो घोषणा है कि अब लाखों करोड़ो बुद्ध होगें।**

योद्धाः - क्या धर्म जन्मगत होता है?

भगवान - **नहीं!** धर्म जन्मगत नहीं व्यक्तिगत होता है।

योद्धाः - हमारे जीवन में वो घटना कब घटेगी?

भगवान - वो सुबह कभी तो आएगी जब तुम भी झूम के नाचोगे, तुम्हारी आत्मा कभी तो जागेगी। **"जो मैं कल था वो तुम आज हो और जो मैं आज हूँ वो तुम कल होगे"।**

योद्धाः - आनंद, सुख कहां और कैसे मिलता है?

भगवान - आनंद, सुख तो आज भी बरस रहा है केवल तुम बस वहां नहीं हो। तुम खोएं हो जप-तप कर, नमाज पढ़ भविष्य में सुखी होने की कल्पना लिए।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - हम ब्रहम को कैसे छू सकते है?

भगवान - जिस दिन बांधने वाली मुठ्ठी न होगी उस दिन सारा आकाश तुम्हारी मुठ्ठी में होगा। खोलो अपनी हथेली को देखो वहां प्रकाश बिखरा दिखेगा। अब मुठ्ठी बंद करो देखो प्रकाश छिटक गया। **"मैं का अहंकार हटा दो वो पहले से ही तुम्हारे सिर चढ़ा बैठा है"।**

योद्धाः - भारत को किस देवी-देवता की पूजा करनी चाहिए जिससे भारत अमीर सुखी और खुशहाल हो सके?

भगवान - तुम सभी देवी-देवता हो तो तुम्हें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। एक दूसरे के जीवन स्तर को ऊपर उठाना चाहिए। तभी भारत या पूरा संसार अमीर और खुशहाल हो सकेगा। और यही धर्म का सार है और इसी को ब्रह्म वाक्य कहते हैं। **और यही सनातन धर्म है। हिन्दू होना सनातन धर्म नहीं है। और सनातन धर्म होता ही नहीं है। हाँ! धर्म जरूर सनातन होता है।**

योद्धाः - धर्म की जिस परिणीति को बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीजस, नानक तथा कबीर ने छुआ, उसे आजतक कोई भी हिन्दू या मुसलमान क्यों नही छू पाया?

parmatman
the ultimate wisdom

भगवान - क्योंकि सभी इन महापुरुषों को पकड़कर इन्ही की पूजा करने लग गए कोई भी चला ही नहीं। मंजिल पूजा करने से नहीं चलने से मिलती है लेकिन बाहर संसार में काबा - काशी जाने से नहीं स्वयं की ओर चलने से।

योद्धाः -योग क्या है?

भगवान - एक योग होता है आध्यात्मिक! जिसका तात्पर्य है तुमसे मिलना। और एक योग होता है संसारिक। जिसका तात्पर्य केवल शारीरिक कसरत करना है।

योद्धाः - कौन सा शास्त्र ठीक है?

भगवान - सत्य, विराट, परमात्मा, खुदा, बोध, शास्त्रों से नहीं शास्त्रा से मिलता है।

योद्धाः - सत्य का साक्षात्कार करने की सही विधि क्या है?

भगवान - दोनो में से एक को मिटा दो या **"तू को या मैं को"**। उसी समय सत्य का साक्षात्कार हो जायेगा। **"खुद को मारो और अपने खुदा को पैदा करो"।**

योद्धाः - मोक्ष कैसे मिलेगा?

भगवान - अगर तुम इन मूर्खता भरे धर्मो को ही छोड़ दो तो तुम आज ही मोक्ष में हो। बुद्धि के बंधनो से मुक्त व्यक्ति को मोक्ष मिलता है लेकिन जीते जी।

योद्धाः - आत्मा का स्वरुप क्या है?

भगवान - आत्मा एक ऊर्जा स्वरुप है जो सम्पूर्ण अस्तित्व में फैली है। उसे अलग वस्तु मानना मूढ़ों ने तुम्हें सिखा दिया है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई?

भगवान - ऊर्जा एक जीवित शक्ति है और उसी जीवित शक्ति ने जीवन को पैदा किया।

योद्धाः - आत्मज्ञान क्या है?

भगवान - केवल स्वयं को पहचानना, यानी स्वयं का साक्षात्कार।

योद्धाः - क्या मरने के बाद आत्मा मुक्त होती है?

भगवान - ऊर्जा को कोई बंधन ही नहीं है तो मुक्त काहे को करना। अगर बिजली की तारों से कहीं आग लग जाए तो क्या बिजली दूषित होगी? आसमान में बादलों के चलने से आसमान मैला नही होता। आत्मा निर्विकार ही रहती है।

योद्धाः - ईश्वर, परमात्मा, खुदा क्या भिन्न-भिन्न व्यक्ति है?

भगवान - नही! यह व्यक्ति ही नहीं है। यह तो तुम्हारे जीवन का ही स्वरूप है तुम जिंदा हो तो खुदा जिन्दा है, ईश्वर और परमात्मा जिन्दा है। **लेकिन तुम्हारे साथ अड़चन यह है कि इस प्रकार के प्रश्न तुम केवल मरी हुई पुस्तकों से या मंद बुद्धि वाले भिखारी महात्माओं से ही सुनना पसंद करते हों। और मजे की बात यह है कि दोनों को ही नहीं ज्ञात।**

योद्धाः - ईश्वर का क्या स्वरूप है?

भगवान - पहले यह समझना आवश्यक है कि ईश्वर कौन है? ईश्वर व्यक्ति नहीं है न कोई 8-10 हाथ वाला महामानव है। ईश्वर तुम्हारे जीवन का नाम है तभी को कहते है कि ईश्वर का माता-पिता नहीं है, ईश्वर कभी मरता नहीं है, कभी बूढ़ा नहीं होता। अब यह सभी धारणाएं जीवन के उपर लगा कर देखों। तो पाओगे कि जीवन का ही दूसरा नाम ईश्वर है, परमात्मा है, खुदा है। तुम मरते हो लेकिन जीवन किसी न किसी रूप में जिंदा ही रहता है। नदी, पर्वत, वायु, अग्नि, धरती, सभी में जीवन विद्यमान है।

योद्धाः - गुरु कौन सा सही है?

भगवान - पूरा अस्तित्व ही गुरु है तुम बस शिष्य बनने को तैयार हो जाओ। गुरु कैसा है उसके पास खुदा है या नहीं इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। मुझें जिससे वो प्राप्त हुआ वो तो एक ठग था। लेकिन उसके हाथ खाली और मैं पूरा लबा-लब। क्योंकि वो ईश्वर तो कण-कण में है

parmatmana the ultimate wisdom

लेकिन वो तुम्हारे भीतर उतरता तभी है जब तुम वहां नहीं होते यानी तुम पूरे-पूरे मिट चुके होते हों। **"प्रेम गली अति साकरी ता में दो न समाए"।** मैं को मारो अगर तू को पैदा करना चाहते हो तो।

योद्धाः - मोक्ष क्या होता है?

भगवान - वो स्थिति जिसमें मैं आज जी रहाँ हूँ।

योद्धाः - निर्वाण की प्राप्ति कैसे होती है और यह क्या है?

भगवान - निर्वाण कोई मरने के बाद होने वाली उपलब्धि नहीं होती। तुम्हारा आज में उपस्थित होने का नाम ही निर्वाण है। और तुम्हारा भूत-भविष्य में होने का नाम ही बंधन है।

योद्धाः - मुक्ति प्राप्त करने के साधन और विधिया क्या है?

भगवान -मुक्ति प्राप्त करने की विधि या साधन कोई नही होते। हाँ! बंधन में बंधने की विधि या साधन जरुर होते है। जैसे स्वास्थ्य प्राप्त करने की कोई भी औषधि नही होती। हाँ! बीमारी हटाने की औषधि जरुर होती है। और जब औषधि खा ली जाती है बीमारी ठीक हो जाती है तो जो बचता है उसी का नाम स्वास्थ्य है। तो तुम्हारी मूढ़ताएं छूट जाए तो तुम मुक्त ही हो।

योद्धाः - हम परमात्मा को कैसे जान सकते है?

भगवान -तुम परमात्मा बन कर ही उसे जान सकते हो। बूंद सागर बनकर ही सागर को जान सकती है। तुम जिस दिन उसे जान लोगे उस दिन जानने वाला नहीं बचेगा। **"मैं को खोकर ही तू को पाया जा सकता है"।**

योद्धाः - परम जीवन क्या होता है और कैसे पाया जाता है?

भगवान - जिस दिन तुम मरोगे उसी दिन तुम परम जीवन को प्राप्त करोगे। लेकिन मैं तुम्हारी देह के मरने की बात नही कर रहा हूँ। मैं तुम्हारे मैं रुपी अहंकार के मरने की बात कर रहा हूँ।

योद्धाः - ब्राहम्ण का क्या तात्पर्य है?

भगवान - ब्राह्मण बना है ब्रह्म धातु से। यानि जिसने ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया, जिसने ब्रह्म का अनुभव कर लिया, जिसने ब्रह्म को जान लिया और जो स्वयं ब्रह्म हो गया हो। वो ही ब्राह्मण। न की जन्मजात।

योद्धाः - ब्राहम्ण ब्रहमा के मुख से और शूद्र जंघा से पैदा क्यों हुए? और यह अवधारणा किसने और क्यों रची?

भगवान -ये कहानियाँ उन लोगों ने रची जिन्हें कुछ भी ज्ञान नही था। हम सभी एक ही ज्योति से पैदा हुए है। **"एक नूर से सब जग उपजा कौन भले कौन मन्दे"!**

योद्धाः - ब्राहम्ण कौन है?

भगवान - ब्राह्मण यानी जो सभी में ब्रह्म को देखे। उस खुदा को देखे। जर्रे-जर्रे में उसकी ज्योत को देखे।

योद्धाः - क्या तीर्थ क्षेत्र में रहने से कुछ लाभ होता है?

भगवान - केवल अपने भीतर रहने से लाभ होता है।

योद्धाः - पाखंड क्या है?

भगवान - जिसके बारे में तुम्हें पता नहीं, और वो सभी सोच जो तुमने औरों से ली है उसे सच मान लेना। और उसी पाखंड अनुसार कृत्य कर स्वयं को धार्मिक मानकर धर्म की खोज से चूक जाना।

योद्धाः - जीवन क्या है?

भगवान - तुम्हारे लिए तो भार, दुःख, नरक और बुद्धों के लिए स्वर्ग, उत्सव, आनंद।

योद्धाः - हमने गंगा को माँ कहा और माँ की मूर्ति बनाई और परमात्मा तुम कहते हो मूर्तियां गलत है क्यों?

भगवान - गंगा की मूर्ति वाली माँ जैसी माँ कहीं भी नहीं है किसी भी दुनिया मे नही। केवल गँगा ही नही दुनिया मे कोई भी नदी, कोई भी जल स्रोत हमें जीवन देता है यानि जीवित रखता है और जो जीवित रखता है जिसके कारण हम जीवित रहते है उस प्राण दायीनि स्रोत को माता या पिता कहना उचित ही है और उसे संभाल कर रखना है, उसका सम्मान करना है, उसे बचाना है यह उचित ही है। लेकिन मूढ़ों की तरह मूर्ति बनाकर आरती उतारना? उससे कुछ भी नहीं होगा वो उचित नहीं है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या हमें मंदिर-मस्जिद में दीपक जलाना चाहिए?

भगवान - क्या अजीब लोग हो तुम? दीपक तो जलाना था स्वयं के भीतर। जो तुम्हारी जिंदगी को रोशन कर देता। लेकिन तुम्हें भीतर ज्ञान ही नहीं है। तुम सभी मिट्टी पत्थर के खिलौनों के सामने, ईंट-पत्थर के मंदिर मस्जिद में दीपक जलाकर स्वयं को संतुष्ट कर लेते हो।

योद्धाः - यह जीवन दुःख है ऐसा शास्त्रों का वचन है क्या यह सही है?

भगवान - तुम्हारे 99 प्रतिशत से ज्यादा शास्त्र कचरा है। उनमे कुछ-कुछ सिद्धान्त ही काम के है। लेकिन कचरा इतना अधिक है कि वो सोना भी फेंकने ही योग्य है। जिसने भी ऐसे शास्त्रों को रचा वो दुःख वादी सोच का व्यक्ति रहा होगा। मैं तो कहता हूँ जीवन सुख है, आनंद, उत्सव, नृत्य, उमंग है। तुम्हें जो अच्छा लगे उसे मान लो। मेरी आज की सोच अच्छी लगे तो उसे मानो या पहले की तरह हमेशा ही दुखी रहों।

योद्धाः - क्या भारत देव भूमि है?

भगवान - आज से 2000 वर्ष पूर्व आज से कई गुना बड़ा भारत था लेकिन तुम 1947 के बाद तो पाकिस्तान को भी देवभूमि नहीं मानतें। देव एक गुण है जो बुद्धों के भीतर प्रकट होता है। कोई भी भूमी देव या देवी नहीं होती।

योद्धाः - क्या कभी संसार धार्मिक होगा?

भगवान - नहीं! संसार कभी धार्मिक नही होता। धर्म मनुष्य के भीतर प्रकट होता है। जिस दिन तुम्हें भी स्वयं का साक्षात्कार होगा उस समय तुम्हारे भी भीतर से धर्म की खुशबू मेहकेगी।

योद्धाः - क्या बड़े भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - मनुष्य शब्द ही हटा दों। जीवन ही बड़े भाग्य से मिलता है। फिर वो चाहे मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का। **इसे जप-तप, नमाज, व्रत, अनुष्ठान में न गवाएं।** दिल खोलकर प्रेम पूर्वक इसे जीएं और औरों को भी जीने दें।

योद्धाः - हमारे धर्म गुरु मृत्युलोक की निंदा क्यों करते हैं?

भगवान - क्योंकि उन्हें यहा सुख, आन्नद, उत्सव, नृत्य, प्रेम नहीं दिखा। उन्हें यहां दुख, वेदना, पाप, कष्ट ही दिखा तो उन्होंने स्वर्ग, जन्नत या अन्य लोको की कल्पनाएं गढ़ ली कि उन्हें वहां जाकर सुख मिलेगा। लेकिन मेरी द्रष्टि में जीवन से बडा आनन्द और कहीं नहीं है।

योद्धाः - परमात्मा का जन्म कब हुआ तथा कैसे हुआ?

भगवान - **जिस दिन तू मरेगा उस दिन ही तेरा परमात्मा जन्मेगा।** फिर जान लेना की जन्म कब हुआ।

योद्धाः - क्या आत्मा अजर है?

भगवान - आत्मा जीवन का नाम है और जीवन कभी भी समाप्त नहीं होता।

योद्धाः - क्या मृत्यु के समय 10,000 बिच्छू के डंक की पीड़ा होती है?

भगवान - नही! यह वचन किसी नासमझ व्यक्ति के हैं। मरते वक्त व्यक्ति को केवल एक ही दुःख होता है कि हाय! कितना सुन्दर जीवन मिला था और मैं जीने से ही चूक गया। और कुछ कोठी बंगले बनाकर मर गया।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - अमीर प्रारब्ध के कर्म के कारण बनता है क्या?

भगवान - नही! यहां कभी कोई भी वस्तु दुबारा नही होती। एक पत्ता भी दुबारा नहीं होता तो मनुष्य कहां से दोबारा होगा। उन्होंने कुछ न करने की अवधारणा पाली है और जो आलसी है जीवन को बदलना नहीं चाहते है वो ऐसी मूर्खता भरी सोच पाल लेते है। और वो सभी धर्म गुरु जो भोली -भाली जनता से पुण्य कर्मो के नाम पर दान लेना चाहते है वो सभी अगले जन्मों में तुम्हारा प्रारब्ध ठीक बने उसी मूर्खता के कारण ऐसी धारणाओं की कहानियां रच देतें है।

योद्धाः - जागरण क्या है?

भगवान - स्वयं को पहचान जाना, सत्य को जान लेना।

योद्धाः - मृत्यु से कैसे बचा जा सकता है हम कौन सा मंत्रा जपे?

भगवान - तुम मौत खोजते हो मैं तुम्हें जीवन खोजना सिखाता हूँ। छोड़ो मौत का डर। **"मौत आए इससे पहले जीवन तो जी लो"।** यह जीवन तुम्हें जीने के लिए मिला है। उपाय कर आज तक कुछ नहीं मिला।

योद्धाः - ब्राम्हणों का जाल कैसे कटेगा?

भगवान - लोगो को बुद्धि द्वारा अपना हर कार्य सोच समझकर ही करना चाहिए। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या दुनिया भर में फैले सभी 365 प्रकार के धर्मों वाले लोगों को यह विचारधारा रखनी होगी कि धर्म से ज्यादा महत्वपूर्ण शिक्षा है। और समाज में प्रेम, करुणा, दया, समानता की भावना, आर्थिक समानता का होना आवश्यक है। केवल इस सोच से ही यह जाल कट सकता है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - भारत में देवता भी पैदा होने को क्यों तरसते हैं?

भगवान - यह कहानियां मात्र है देवता शरीर नहीं होता। देवता तो एक गुण है। अगर आपके भीतर करुणा, दया, समानता की भावना, प्रेम आदि के गुण है तो आप देवता है और अगर आपके भीतर हिंसा, क्रोध, अहंकार की भावना है तो आप दानव है। मेरी द्रष्टि में तो आज अगर देखे तो दुनिया भर में दानव ही पैदा होने को तरसते है।

योद्धाः - 33 करोंड़ देवी देवता की अवधारणा किसने बनाई ? और क्या ये सही है ?

भगवान - जिस किसी प्रबुद्ध ने, ज्ञानी ने, जाग्रत ने यह अवधारणा बनाई थी उसे उस समय के लोगो में जिनकी जंनसख्या लगभग 33 करोड़ थी उसे उन सभी में देवी-देवता ही दिखते थे तो उस बुद्ध ने कह दिया था कि 33 करोड़ देवी-देवता है। लेकिन लकीर के फकीर लोगों ने 33 करोड़ मूर्तियां समझ लिया। क्योंकि उन्होनें सभी में देवी-देवता की भावना को नही समझा। वास्तव में हम सभी देवी-देवता है और इस स्थिति तक पंहुचना ही धार्मिक होना है।वता की अवधारणा क्यों और किसने बनाई?

योद्धाः - बुद्धत्व क्या है?

भगवान - तुम्हारें मन में से भविष्य की कल्पनाओं का मिट जाना और आज के प्रति प्रेम का जन्म होना, तथा संसार मात्र के प्रति करुणा का उदय होना।

योद्धाः - सत्य का साक्षात्कार करने की विधि क्या है?

भगवान - दोनों में से एक को मिटा दो **"या तू को या मैं को"।**

योद्धाः - आस्तिक होना अच्छा है या नास्तिक होना?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - यकीनन आस्तिक होना ही अच्छा है लेकिन जिनको आजतक तुमने आस्तिक माना है उस प्रकार का मत समझना। वो तो नास्तिक से भी निचली स्थिति के व्यक्ति है। आस्तिक माने वो व्यक्ति जो यह धारणा रखे कि जीवन ने जैसा उसे बनाया वो पूर्णत्या ठीक है। अगर वो मन्दिर-मस्जिद जाकर आरती पूजा कर कुछ बदलवाना चाहता है तो वो नास्तिक है।

योद्धाः - आत्म ज्ञान कब होगा?

भगवान - आत्म ज्ञान कोई ऐसा ज्ञान नहीं होता जैसा तुमने अपनी कोई धार्मिक पुस्तक रट ली। नहीं! आत्म ज्ञान तो एक प्रक्रिया है जो हमेशा ही चलती रहती है। इसीलिए तो ज्ञानी कभी

भी नहीं कहता कि उसे बहुत कुछ ज्ञात है। क्योंकि वो मानता है कि ज्ञान रोज नया आ रहा है। तुम लेने को राजी हो तो तुम भी आत्म ज्ञान के पथिक हो ।

योद्धाः - क्या जन्म-मृत्यु पूर्व निर्धारित है?

भगवान - शायद तुम्हारे लिए तो हाँ। और जिन्हें सत्य मिल गया उनके लिए कदापि नहीं।

योद्धाः - मोक्ष कैसे मिलेगा?

भगवान - अगर तुम सभी प्रकार की धार्मिक मूढ़ता भरी सोच छोड़ दो तो जीते जी ही मोक्ष पा जाओगें।

योद्धाः - धार्मिक कौन और अधार्मिक कौन?

भगवान - जो संसार मात्र से प्रेम करे वो धार्मिक। और जिसकी सोच मन्दिर-मस्जिद में अटक जाए वो अधार्मिक। लेकिन तुम तो आजतक बिलकुल ही उल्टा मानते आए हों।

योद्धाः - आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - जो प्रकृति के चलन को स्वीकारे वो आस्तिक और जो मन्दिर-मस्जिद में जाकर दीया, प्रसाद, मोमबत्ती, अगरबत्ती जलाकर सभी कुछ बदलवाने की इच्छा रखें वो नास्तिक।

योद्धाः - क्या पुण्य करना ठीक नही है?

भगवान - जो तुम करोगे वो पुण्य हो ही नही सकता। तुम रास्ते से हट जाओं फिर जो होगा वो स्वयं में पुण्य होगा।

योद्धाः - कल्प वृक्ष क्या क्या कर सकता है?

भगवान - कल्प वृक्ष किसी आलसी महात्मा की सोच की पैदाइश है। यह एक आलसी आदमी को नए नए स्वपन दिखाता है। और उसे धोखे में रखता है कि एक न एक दिन तुम्हारे स्वपन जरूर पूरे होंगे। और अच्छे दिन आएगें।

योद्धाः - क्या पुस्तकों में जो स्वर्ग का वर्णन है वो सही है?

भगवान - नहीं! ये मूढ़ो की कल्पनाओं का विस्तार है और कुछ भी नहीं।

योद्धाः – दया, करुणा, प्रेम आदि गुणो का जीवन में क्या महत्त्व है?

भगवान - ये तुम्हारे जीवित होने का प्रमाण है, क्योकि पत्थरों में ये गुण नहीं पाए जाते। तभी तो कहते है कि जो जीवित है, जाग्रत है, प्रबुद्ध है वही धार्मिक है। और बाकि सभी हिन्दू-मुस्लिम या 365 प्रकार के नाम वाले है। अगर तुम में भी यह गुण है तो तुम भी धार्मिक हो अन्यथा नहीं।

योद्धाः - क्या अपने-अपने धर्मों के अनुसार आचरण करना ठीक नही है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - इससे तुम दिखावें के धार्मिक बन जाओगें और इसी प्रकार चलने को पाखंड कहते है। धर्म अपना-अपना नहीं होता। धर्म केवल प्रेम होता है। प्रेम सभी का एक जैसा होता है।

योद्धाः - क्या खुदा, भगवान, अल्लाह की कोई मूरत होती है?

भगवान - हाँ! दुनिया भर में फैली करोड़ों-अरबों मूरत उसी की है लेकिन जब से तुमने परमात्मा को, खुदा को दूर सातवें आसमान पर बिठा दिया तभी से सब उल्टा हो गया है।

योद्धाः - मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?

भगवान - केवल जीवन को जीना। और मनुष्य जीवन का ही नहीं हर जीवन का लक्ष्य है कि प्रेम पूर्वक, हंसी-खुशी जीवन को जीया जाए। यह जीवन कोई तुम्हें पापो के फल स्वरुप नहीं मिला है पागल मत बनो।

योद्धाः - क्या जन्म मृत्यु विधि के हाथ है?

भगवान - आँखों पर काली पट्टी बांधकर सड़क पार करके देख लो किसके हाथ है।

योद्धाः - मनुष्य इतना कठोर क्यों होता जा रहा है?

भगवान - पत्थरों को पूजोगे तो हृदय पत्थर का ही होगा। जिन्दा लोगों से प्रेम करते तो तुम्हारा हृदय भी जिन्दा ही होता। संसार मात्र से प्रेम करना ही धर्म होता है। मंदिर-मस्जिद में अटकना बंधन है।

योद्धाः - क्या पूजा करना ठीक नही है?

भगवान - तुम अपने माँ-बाप से, पत्नी-बच्चों से संसार में प्रेम करना छोड़कर उनकी पूजा करने लग जाओं। बस एक दिन में पता लग जाएगा कि प्रेम करना ठीक है या पूजा करना।

योद्धाः - क्या भाग्य पूर्व निंधारित होता है? जिसे ब्रह्मा लिखकर भेजता है?

भगवान - **हाँ!** गधों के लिए तो वो लिखकर ही भेजता है कि तुम स्कूल नही जा पाओगें और पूरा जीवन दूसरे का बोझा ही ढ़ोओगें। और मनुष्य के लिए कोई ब्रह्मा नहीं क्योंकि वो स्वयं अपने भाग्य का विधाता है।

योद्धाः - क्या पुराने सारे और सभी धर्मो के शास्त्र गलत है?

भगवान - तुम संसार में आज की जनरेशन के 10 वर्ष के बच्चें को देखों और तुलना करों उस समय के साथ जब तुम 10 वर्ष के थे। अब बताओं आज का 10 वर्ष का बच्चा अक्लमंद या तुम जब 10 वर्ष के थे तब तुम अक्लमंद थे। उत्तर आएगा कि आज का बच्चा ज्यादा अक्लमंद है। अब सोचों हमसे 5000 वर्ष पहले जो हमसे कम बुद्धिमान लोग थे हम उनकी लिखी हुई पुस्तकों को ठीक मान रहे है। आज बच्चा बड़ा हो गया है। अब नए शास्त्र रचने होगें।

योद्धाः - क्या मंगलवार को कुछ खाने पीने में सोचना चाहिए?

भगवान – **"या रब शराब पीने दे मुझे मस्जिद में बैठकर या ऐसी जगह बता जहाँ खुदा न हो"।**

योद्धाः - क्या इस जगत में फिर कभी कोई पैगम्बर, अवतार, या परमात्मा का पुत्रा आएगा?

भगवान - केवल कुछ नासमझ व्यक्ति ही अपने बारे में ऐसी धारणाएं पालने की कल्पनाएं करते है। आज से पहले भी जो महापुरुष आए उनमे से किसी ने भी ऐसी घोषणा नहीं की। हाँ! उनके जाने के बाद उनके अनुयायियों ने उनके बारे में ऐसे ही मूर्खता पूर्ण वक्तव्य दिए।

योद्धाः - क्या हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन होना धार्मिक होना नही होता?

भगवान - अगर ऐसा ही होना धार्मिक होता तो बुद्ध-महावीर जो जगंलो में भटके वो तो बिलकुल सही नहीं थे। या तो तुम्हारी मान्यताएं ठीक या बुद्ध-महावीर को जो मिला वो ठीक।

योद्धाः - हम कृष्ण, बद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद आदि महापुरुषों की पूजा क्यों करते है?

भगवान - क्योंकि हमारा समाज कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष दोबारा नहीं बना पाया। सोचो अगर आज दुनिया में कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष 100 करोड़ व्यक्ति जिन्दा घूम रहे होते तो क्या हम इन महापुरुषों के मन्दिर बनाते?

योद्धाः - क्या पुराने सभी शास्त्र गलत है?

भगवान - जो शास्त्र तुम्हारे जीवन के अनुभव से तुममें उपजेगा बस वही शास्त्र ठीक है। और तुम्हारे संसार में जो हजारों शास्त्र सभी के धर्मो में है वो सभी तुम्हारे लिए गलत है।

योद्धाः - जैसा हम अब तक करते आऐ है कि पैदा हुए बच्चें को ही हिन्दु-मुस्लिम आदि बना देते है क्या वो ठीक नही है?

भगवान - तुम्हारे घर में अब जो बच्चा पैदा हो उसे 25 वर्ष बिना हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन बनाए बड़ा करके देख लो। बड़ा होकर वो तुम्हारें जैसे मूढ़ धार्मिको पर हसेगां।

योद्धाः - अगर पवित्र जीवन भी जिया जाए और मन्दिर-मस्जिद भी जाया जाए तो क्या कुछ हानि है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - नही! लेकिन पवित्र जीवन जीने के बाद मन्दिर-मस्जिद जाकर करोगें क्या? धर्म युद्ध की तैयारी? या जेहाद की तैयारी?

योद्धाः - हमें किस मूर्ति की पूजा करनी चाहिए?

भगवान - स्वयं की मूर्ति बनवा लो वही परमात्मा की मूर्ति है और बाकी सभी मूर्तियों को बाहर फेंक दो।

योद्धाः - हमें पाप का भय लगता है कि अगर तुम्हारें कहने पर हम अपना पुराना धर्म, मूर्ति या शास्त्र त्याग दें?

भगवान - अपना सभी पुराना मुझे दे जाओ पापों के साथ। मैं उन सभी पापों को भी मुक्त कर दूंगा।

योद्धाः - क्या ध्यान वास्तव में जीवन को बदल सकता है?

भगवान - हाँ! ध्यान यानी तुम्हारी ही ना होने की अवस्था। और जैसे ही तुम नहीं होते हो वहां परमात्मा ही होता है। और जब तुम परमात्मा ही होते हो तो जीवन तो बदल ही गया। और अगर जीवन न बदले तो समझना तुम किसी धर्म में नही हो किसी गिरोह के हिस्से हों।

योद्धाः - हमें पूजा स्थल में किसकी तस्वीर लगानी चाहिए?

भगवान - एक आईना लगवाना चाहिए उसी में परमात्मा की तस्वीर दिख जाएगी।

योद्धाः - क्या दीक्षा लेने से कुछ भी लाभ नही होता?

parmatmana

भगवान - नहीं! क्योंकि अगर दीक्षा से ही तुम धार्मिक हो सकते तो कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर सभी तुम्हें दीक्षा देकर धार्मिक बना गए होते।

योद्धाः - जीवन में क्या आवश्यक है?

भगवान - प्रेम से जी लो, एक ही जिन्दगी है। न आत्मा है और न ही दूर कही मोक्ष है।

योद्धाः - क्या कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर के समय में धरती पर धर्म था?

भगवान - **नहीं!** धर्म धरती पर नहीं व्यक्ति में होता है। उन महापुरुषों में था। तुम तो तब भी ऐसे ही खाली थे।

योद्धाः - आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?

भगवान - अस्तित्व को स्वीकारने वाला और उसी स्वीकार के अनुसार जीने वाला आस्तिक। और अस्तित्व के प्रति नकार कि द्रष्टि रखने वाला नास्तिक। इस आस्तिक और नास्तिक का मंदिर मस्जिद जाने और ना जाने से कुछ भी सम्बंध नहीं है। लेकिन तुम तो आज तक इसका विपरीत ही मानते आए हो। अपने विचारों में सुधार करों।

योद्धाः - बुद्धजन संसारी लोगों की दृष्टि में पागल से क्यों प्रतीत होते हैं?

भगवान - जीते जी जिसके भ्रम टूट जाते है वो सांसारिक लोगों को पागल से ही प्रतीत होते है।

योद्धाः - क्या प्रबुद्धजनों की मृत्यु होती है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - हाँ! लेकिन जीते जी ही हो जाती है। 80 से 90 वर्ष के बाद तो देह जाती है।

योद्धाः - कैसे ज्ञात होगा कि सत्य मिल गया है?

भगवान - जब तुम्हारा घट फूट जाए।

योद्धाः - कौन सा शास्त्र ठीक है जिससे प्रज्ञा, बोध, जागरण आ जाए?

भगवान - प्रज्ञा, बोध, जागरण पुस्तकों से कभी भी नही समझा जा सकता। तुम भी चलो! रुको मत कहीं भी। वो समय के साथ-साथ स्वतः ही आ जाएगा।

योद्धाः - क्या भाग्य हमारे हाथ में है?

भगवान - बिलकुल! भाग्य का तात्पर्य होता है कि जीवन हमें भाग्य से ही मिला है। लेकिन जब से भाग्य का अर्थ लोगो ने धन के मिले होने से ले लिया है तब से भारत गरीब ही होता जा रहा है। जीवन भी तुम्हारे हाथ में है और धन पैदा करना भी तुम्हारे ही हाथ में है।

योद्धाः - जीवन का असली अर्थ क्या है?

भगवान - केवल प्रेम पूर्वक जीना।

योद्धाः - क्या जिज्ञासा धर्म प्राप्ति का प्रथम चरण है?

भगवान - तुम्हारा मरना ही धर्म प्राप्ति का पहला और आखिरी चरण है।

योद्धाः - क्या जाति व्यवस्था ठीक है?

भगवान - **हाँ!** गधा एक जाति का है और घोड़ा एक जाति का। तुम जानो तुम्हें कौन सी जाति पसन्द है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या मनुष्य अछूत होता है?

भगवान - **हाँ!** जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है उन्हें छूआ-छूत मानना चाहिए। क्योंकि इससे वो 12-15 प्रतिशत लोग जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है वो अगर बचे हुए 85 प्रतिशत को छूंएगे तो वो भी रोगी बन जाएगें।

योद्धाः - हमारे देश में गरीबी कब समाप्त होगी?

भगवान - जब समाज में करोड़ों जिन्दा कृष्ण, बुद्ध, नानक, कबीर, मोहम्मद, जीसस और अम्बेडकर घूमेंगें।

योद्धाः - हिन्दू या मुस्लिम धर्म के संत महात्माओं का समाज में क्या योगदान रहा है?

भगवान - अगर तुम 1975 के बाद के सभी हिन्दू, मुस्लिम संत महात्माओं को हटा कर अपने देश का आंकलन करो तो तुम्हे ठीक ठीक समझ आ जायेगा की इन संत महात्माओं का समाज में कितना बड़ा योगदान रहा है और किस दिशा में रहा है यह समझना महत्वपूर्ण है। अब सोचों अगर समाज को धार्मिक नेता या राज नेता नही बांटते तो समाज कितना सुंदर होता।

योद्धाः - क्या कौआ हमारा पितर होता है?

भगवान - **हाँ!** चिंता मत करो। तुम जब मरोगें तो कौऐं ही बनोगे क्योंकि पूरा जीवन तुमने धर्म के नाम पर अपने-अपने धर्म स्थलों में बैठकर काँव-काँव ही तो की है।

योद्धाः - क्या काबा-काशी जाने से कोई लाभ नहीं होता?

भगवान - होता है। तुम्हारी पिकनिक हो जाती है। लेकिन असल में तुम्हारे ही भीतर काबा-काशी है और वहीं जानें से लाभ होता है।

योद्धाः - इस जगत का असली मालिक कौन? खुदा या भगवान?

भगवान - तुम।

योद्धाः - क्या ज्योतिष विद्या गलत है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - नहीं! बिल्कुल ठीक है। क्योंकि वो विद्या जिससे हमारे देश में कुछ बेरोजगार लोग पेट भरने में सक्षम है वो गलत कैसे हो सकती है। और तुम्हारें भविष्य के बारे में वो ज्योतिष विद्या बिल्कुल ऐसी ही है जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को अंधेरी रात में रास्ता बताऐं।

योद्धाः - मृत्यु के बाद क्या होता है?

भगवान - एक दीपक जलाओ देखो कहां से ज्योति आई और अब बुझाओ देखो कहां गयी। बस वहीं तुम पहुंच जाते हो।

योद्धाः - क्या हम यहां सुख पैदा कर सकते है?

भगवान - हाँ! जब तुम दुःख पैदा कर सकते हो तो सुख क्यों नहीं।

योद्धाः - क्या धन का दान देने से खुदा प्रसन्न होता है?

भगवान - जिस धन को मनुष्यों ने बनाया और तुम्हारें मूढ़ महात्माओं ने जिसकी हमेशा निंदा ही की है वो निंदनीय वस्तु से भगवान प्रसन्न ही कैसे होगा?

योद्धाः - क्या समाज में अम्बेडकर के मन्दिर बनाने से समाज सुधरेगा?

भगवान - नही। तुम समाज में जिन्दा 5 करोड़ कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, अम्बेडकर पैदा कर दो समाज तत्क्षण सुधर जाएगा।

योद्धाः - क्या दान, दक्षिणा से कुछ लाभ होता है?

भगवान - नहीं! अगर तुम दान दक्षिणा के बदले अपने पापों का सौदा करना चाहते हो तो यह मुमकिन नहीं है। हाँ! यही काम अगर तुम समाज सेवा करके लोगों को शिक्षित और उनका

parmatmana the ultimate wisdom

जीवन उत्तम करने को करते हो तो यह परमात्मा यानी जीवन की ही सेवा है। अच्छा कृत्य है लेकिन धर्म का कुछ भी लेना-देना नहीं है क्योंकि धर्म को लेना देना केवल मनुष्य से होता है।

योद्धाः - परमात्मा के दर्शन करने के लिए क्या करे?

भगवान - केवल अपनी आंखे साफ करो। तो पाओगे कि वही खुदा तुम्हारे चारों तरफ नाच रहा है।

योद्धाः - बुद्धत्व कैसे प्राप्त होता है?

भगवान - किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ लो जो मर चुका हो। और उससे तुम भी मरने की विधि समझ लो और तुम भी मिट **जाओ। "मरो हे जोगी मरो, मरो मरन है मीठा। तिस मरनी मरो जिस मरनी गोरख मर दीठा"॥**

योद्धाः - मन्दिर-मस्जिद आदि बनाना क्या धर्म का कार्य नही होता?

भगवान - बिरला ने भारत में अनेको मन्दिर बनाए, अम्बेडकर ने लोगो को विद्या के मन्दिर में जाने को प्रेरित किया, टाटा और धीरु भाई ने देश के लिए धन का सृजन किया। स्वयं अपनी बुद्धि से निर्णय करो कि कौन सा कार्य धर्म का है।

योद्धाः - मरते समय राम नाम या गंगा जल का क्या लाभ?

भगवान - जो व्यक्ति पूरा जीवन बंधन में रहा तुम सोचते हो मरते वक्त राम नाम से या गंगा जल की 2 बूंद से कोई लाभ होगा? लाभ जीवन में चाहिए था कि मुक्त जी पाता। लेकिन वो तो बंधा रहा अपनी ही परम्पराओं से, विचारधाराओं से। मरने के बाद मुक्ति की धारणा बुद्धों की नही बुद्धूओं की सोच है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या मनु संहिता के अनुसार चलना ठीक नही है?

भगवान - नही! बिल्कुल ही गलत है। पहले का समाज बहुत ही मंद बुद्धि समाज था उस समय लोगों को भी चाबुक के सहारे ठीक रखा जाने का प्रयास किया जाता रहा होगा। लेकिन आज समाज का बौद्धिक स्तर बहुत ऊंचा है। आज उसी प्रकार से लोगों को हाँकना बिल्कुल ही गलत होगा।

योद्धाः - क्या गरीब-अमीर प्रारब्ध के कर्मो के कारण बनता है?

भगवान - नहीं! यहा कभी कोई भी वस्तु दुबारा नही होती। एक पत्ता भी दुबारा नहीं होता तो मनुष्य कहाँ से दोबारा होगा। यह जीवन का अवसर गलती से तुम्हें मिल गया है इसका भरपूर आन्नद लो और दूसरों को भी जीने दों।

योद्धाः - ब्राहम्ण ही ऊंच-नीच क्यों मानते है, छुआ-छूत क्यों मानते है?

भगवान - ऊंच-नीच या छुआ-छूत को मानने वाला व्यक्ति ही स्वयं को ब्राह्मण वाद की परम्परा में घोषित कर देता है। हर धर्म में ऐसे लोग मिल जाएगे जो स्वयं को उच्च तथा दूसरो को निम्न मानते है। वो सभी एक पुरानी परम्परा को जिन्दा रखना चाहते है **"और उसी सड़ी-गली लाश का नाम है ब्राह्मण वाद" ।** इसको किसी जाति विशेष से नहीं जोड़ना चाहिए।

योद्धाः - क्या राम राज दुबारा लाया जाना चाहिए?

भगवान - नहीं! तुम्हें ज्ञात भी है कि राम राज में क्या व्यवस्थाएं थी। स्त्रीयां-पुरुष गुलामो की तरह बाजारों में बिकते थे, स्त्रियों का शोषण होता था। चारो तरफ का समाज ऊंच-नीच के वर्गीकरण में विभाजित था। **इस प्रकार का राम राज हमारे देश के माथे पर एक ध्ब्बा ही लगाएगा।**

योद्धाः - भारत धर्म प्रधान देश है फिर भी गरीब क्यों?

भगवान - क्योंकि तुम सभी के तथाकथित धर्मों की बागडोर भूखे, नंगे, भिखमंगे धर्मगुरुओं ने छीन ली है। और उन्होंने धर्म की परिभाषा ही बदल दी है। अगर आज भी हमने धर्म का सही अर्थ न समझा तो इस देश का भविष्य हमेशा ही अंधकार में रहेगा।

योद्धाः - क्या मरने के बाद हमें स्वर्ग मिलेगा?

भगवान - जिसे आज जीना आ गया वो कभी भविष्य के लिए सपने नहीं बुनता। और जो आज भी भविष्य की कल्पना संजोए है यानि वो आज नरक में ही जी रहा है।

योद्धाः - भारत का इतिहास 5500 वर्ष पुराना फिर भी भारत पिछड़ा क्यों?

भगवान - क्योंकि भारत की छाती पर अज्ञानता ने कब्जा कर लिया है। भारत ने सोच पाली हुई है कि अमीर-गरीब प्रारब्ध कर्मों के कारण होता है जो कि पूर्णतया गलत है। जब तक तुम अपना भविष्य अपने हाथ में नहीं लोगे तब तक भारत गरीब और पिछड़ा ही रहेगा।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - धर्म किस उम्र में सीखना सही है?

भगवान - मनुष्य को पहले पेट भरने योग्य बनाओ। जब उसका पेट भर जाएगा तो वह स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाएगा धर्म की खोज करने।

योद्धाः - क्या धर्म युद्ध में जान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है?

भगवान - यह किसी मूढ़ व्यक्ति के वचन है। कोई भी व्यक्ति अगर अपने धर्म का तो उत्थान चाहता है और दूसरे के धर्म का विनाश चाहता है तो वह व्यक्ति धार्मिक हो ही नहीं सकता।

योद्धाः - भारत अमीर कैसे होगा?

भगवान - कसम खा लो कि जिंदगी को भाग्य के भरोसे न छोड़ेगे। बस यही सूक्त है भारत के और तुम्हारे अमीर होने का।

योद्धाः - क्या सही और क्या गलत?

भगवान - कुछ नहीं। न पाप, न पुण्य, न सही, न गलत, अहंकार छोड़ कर बहते चलो। लेकिन यह अवस्था पक्कें घट की है कच्चें घट इसे न समझ सकेगें।

योद्धाः - परमात्मा और खुदा में क्या अंतर है ?

भगवान - दोनों ही तुम्हारे जीवन के नाम है एक पैसे का भी अंतर नहीं है। **हाँ!** मूढ़ों ने हिन्दू-मुसलमान बनाकर अन्तर तुम्हें दिखा दिया है। तभी तो जिसको उसका दीदार हो जाता है वो गा उठता है। **"नकल नहीं तेरी असल हूँ मैं"। "अब मैं छुपता हूँ तू ढूंढ़"।** जिसने भी उसे पाया उसने वहां अपनी ही तस्वीर देखी। जब तक तुम्हें भी दूसरी मूरत दिखती है तब तक दूरी विद्यमान है।

योद्धाः - हम अज्ञान से कैसे मुक्त होंगे?

भगवान - तुम्हें अज्ञान से नही, तुम्हारें मूढ़ता भरे ज्ञान से मुक्त होना है जिसको आज तक तुम ज्ञान मानते आए हो, उससे मुक्त हो जाओ।

योद्धाः - हमें यह अनुभव कैसे हो कि जीवन ही खुदा है?

◌ागवान - 10-20 दिन रोज एक घंटा श्मशान में जाकर बैठो। विपरीत में ही वास्तविक स्थिति का अनुभव होता है।

योद्धाः - आत्मा का अस्तित्व है या नहीं?

भगवान - जिस प्रकार की आत्मा का वर्णन तुम्हारे शास्त्रों में है ऐसा कोई भी अस्तित्व नहीं है। वह कुछ और ही है तुम देख तो सकते हो लेकिन तुम उसे पुस्तकों में से पढ़कर कुछ भी नही समझ सकते हो।

योद्धाः - संसार का स्वरूप क्या है? क्या यह स्थिर है या परिवर्तनीय?

भगवान - तुम्हारी सारी कल्पनाओं का नाम ही संसार है। और जो-जो मूढ़ता भरी कहानियां तुमने सुन रखी है अपने-अपने धर्मो के विषय की उसका नाम संसार है।

योद्धाः - संसार को कौन चला रहा है?

भगवान - संसार जीवित है और जीवित वस्तुए स्वयं चलती है। मृत को चलाना पड़ता है। जैसा तुम्हारे शास्त्रों को चलाना पड़ता है। मुर्दे को तुम्हे स्वयं उठाकर ले जाना होता है और जिन्दा स्वयं वहां पहुंच जाते है। और संसार ही क्या पूरे ब्रहाण्ड़ को कोई नही चला रहा है। जीवन स्वयं में ही गति मान है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या धर्म की निरंतरता है, या यह परिवर्तनशील है?

भगवान - जिसे तुम धर्म कह रहे हो वो धर्म नहीं छलावा है। धर्म तो एक प्रकार के होश का नाम है तुम्हारे में घट गया तो तुम धार्मिक। और जब किसी को होश आ जाता है तो वह कम या ज्यादा नहीं होता। और निरंतरता! तो धर्म नहीं यह जगत का होना और तुम्हारा होना निरंतरता है।

योद्धाः - निर्वाण की प्राप्ति कैसे होती है और यह क्या है?

भगवान - निर्वाण कोई मरने के बाद होने वाली उपलब्धि नहीं होती। तुम्हारा आज में उपस्थित होने का नाम ही निर्वाण है। और तुम्हारा भूत-भविष्य में होने का नाम ही बंधन है। इसी को प्रबुद्ध जनों ने महानिर्वाण कहा है।

योद्धाः - संसार की उत्पत्ति और इसका कारण क्या है?

भगवान - वस्तु में गति और परिवर्तनशील होने के कारण अणु ने अपने जैसे अणुओं का विस्तार किया और अरबों वर्ष बाद जो हमें दिख रहा है यह उस एक अणु का ही स्वरूप है। अणु आज भी खिल रहा है उसका अंत कभी भी नही है। और इसका कारण-कुछ भी नहीं है। पक्षियों के गाने का, फूलों के सुगन्धित होने का, नदियों के संगीत का, फलों के मीठे होने को और **"मेरा तुम्हें समझाने का"** कोई भी कारण नहीं है। यह सभी अकारण है।

योद्धाः - शंकर का मत है कि ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या! क्या यह पंक्ति ठीक है?

भगवान - नही! सही पंक्ति है। **"जगत सत्य ब्रह्म तुम"।** कब तक पुरानी उल्टी धारणाओं को ही ढ़ोते रहोगें।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - भौतिक वस्तुओं की स्थिति और उनकी वास्तविकता क्या है?

भगवान - कोई भी वस्तु स्थिर नहीं होती। तुम्हारे प्रयोग में जो आ जाए वो तुम्हारे लिए वास्तविक है। जैसे लकड़ी में आग हजारों वर्ष पहले भी थी लेकिन आदि मानव के लिए आग वास्तविक नही थी। तुम्हारे में भी वही आत्मा विद्यमान है जो बुद्धों में होती है लेकिन बुद्धों के लिए आत्मा वास्तविक और तुम्हारे लिए कल्पना मात्र।

योद्धाः - कर्म का प्रभाव किस प्रकार से कार्य करता है?

भगवान - तुम्हारे अवचेतन मन में जाकर तुम्हारे ही चारों तरफ सुख और दुख पैदा करता है। और उसके अलावा कहीं कोई व्यक्ति नहीं बैठा है जो तुम्हारे कर्मों के पाप-पुण्य का हिसाब रख रहा है।

योद्धाः - ध्यान और साधना का क्या महत्व है और यह कैसे काम करता है?

भगवान - ध्यान का जो तात्पर्य तुम सभी ने आंखें बंद कर मौन होने से मान लिया है वह त्रुटिपूर्ण है। ध्यान का मतलब बाहर की आंखें बंद कर मौन नही रहना है बल्कि बुद्धि से मौन होना है। यानी निर्विचार होना है। और निर्विचार होना ध्यान है और उस निर्विचार होने की विधि का नाम साधना है।

योद्धाः - क्या भारत कभी सोने की चिड़िया था?

भगवान - हाँ! कुछ चुनिंदा व्यक्तियों के लिए पहले भी था और केवल चुनिंदा लोगों के लिए आज भी है। गूगल करों 145 करोड़ की संख्या में 280 लोगों के लिए आज भी है। एक व्यक्ति को देखने से देश का भान नहीं होता। देश की हालत अलग होती है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - विवेक और अज्ञान के बीच अंतर क्या है?

भगवान - इसका उत्तर कोई दूसरा तुम्हें समझाएगा भी तो तुम्हारे लिए व्यर्थ ही होगा। ध्यान करो, विवेक आएगा तो अपने अज्ञान का पता चल जाएगा। वैसे अज्ञान नामक कोई वस्तु नहीं होती। जैसे अंधकार नामक कोई वस्तु नहीं है केवल प्रकाश का न होना ही अंधकार है। ऐसे ही विवेक का, ज्ञान का, बोध का, प्रज्ञा का न होना ही अज्ञान है।

योद्धाः - धर्म क्या है? क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई होना धर्म नहीं है?

भगवान - धर्म नाम है तुम्हारे भीतर की वीणा के बजने का, तुम्हारे भीतर संसार के प्रति प्रेम के पैदा होने का। और जो मार्ग है उस प्रेम तक पहुँचने के उनका नाम है हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई ।

योद्धाः - हमारे धर्म गुरु मृत्युलोक की निंदा क्यों करते हैं?

भगवान - क्योंकि उन्हें यहां सुख, आन्नद, उत्सव, नृत्य, प्रेम नहीं दिखा। उन्हें यहां दुख, वेदना, पाप, कष्ट ही दिखा तो उन्होंने स्वर्ग, जन्नत या अन्य लोकों की कल्पनाएं गढ़ ली कि उन्हें वहां जाकर सुख मिलेगा। लेकिन मेरी दृष्टि में जीवन से बडा आनन्द और कहीं नहीं है।

योद्धाः - मुक्त कैसे होगें?

भगवान - सारी पुरानी रुढ़िवादी विचारधाराओं को छोड़कर। लेकिन जीते जी। मरने के बाद कोई किसी भी प्रकार की मुक्ति या बंधन का प्रश्न नहीं होता।

योद्धाः - भारत को किस देवी-देवता की पूजा करनी चाहिए जिससे भारत अमीर सुखी और खुशहाल हो सके?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - तुम सभी देवी-देवता हो तो तुम्हें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। एक दूसरे के जीवन स्तर को ऊपर उठाना चाहिए। तभी भारत या पूरा संसार अमीर और खुशहाल हो सकेगा। और **"यही धर्म का सार है और इसी को ब्रह्म वाक्य कहते हैं। और यही सनातन धर्म है"।**

योद्धाः - स्त्रियों को हर प्रकार से पुरुष के बराबर समानता क्यों नहीं मिलती?

भगवान - क्योंकि स्त्रियां संघर्ष ही नहीं करती। दुनिया में कुछ भी भीख में नहीं मिलता अगर मिल भी जाए तो उसे भीख कहते है अधिकार नहीं। समानता का अधिकार स्त्रियों का हक है और हक लड़कर ही लिया जा सकता है।

योद्धाः - पिछडे वर्ग को समाज में समानता क्यों नहीं मिलती?

भगवान - क्योंकि पिछड़ा वर्ग संघर्ष ही नहीं करता। दुनिया में कुछ भी बिना संघर्ष के नहीं मिलता अगर मिल भी जाए तो उसे भीख कहते है अधिकार नहीं। समानता का अधिकार मानव मात्र का हक है और हक लड़कर ही लिया जा सकता है। अगर अपना हक चाहिए तो उठो और क्रांति करो।

योद्धाः - धर्म या मनुष्य दोनों में से क्या आवश्यक है?

भगवान - किसी भी प्रकार का जीवन। चाहें मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का।

योद्धाः - दुनिया में कौन सा धर्म अच्छा है?

भगवान - जो तुम्हें सत्य का बोध करवा दें। लेकिन ध्यान रखना सत्य तुम्हारी हिन्दू-मुस्लिम की धारणाओं से पूर्णतया भिन्न होता है।

योद्धाः - परमात्मा, ईश्वर, सत्य, विराट, खुदा, अल्लाह का अनुभव किस तीर्थ या किस गुरु के द्वार पर होता है?

भगवान - परमात्मा, ईश्वर, सत्य, विराट, खुदा, अल्लाह सर्वव्यापी है तो उसका अनुभव कहीं भी हो सकता है बस तुम्हें मिटना आना चाहिए।

योद्धाः - क्या प्रार्थना करना जरूरी है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - प्रार्थना मैं कर सकता हूँ यह धारणा ही मूर्खतापूर्ण है। प्रार्थना तो चल ही रही है तुम्हारे चारों तरफ। पेड़-पौधें, पशु -पक्षी, नदियां- सागर, सभी उसी विराट की प्रार्थना में लीन ही है। तुम्हें तो बस अपनी मैं मिटा कर उसमे शामिल होना है।

योद्धाः - ध्यान क्या है?

भगवान - मन की निर्विचार अवस्था की दशा और तुम्हारा न हो जाना।

योद्धाः - आध्यात्मिक साधना में धैर्य का क्या महत्व है?

भगवान - धैर्य से मर जाओ आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो जाएगी।

योद्धाः - क्या प्रकृति से जुड़ना आध्यात्मिकता है?

भगवान - **हाँ!** क्योंकि प्रकृति और परमात्मा अलग अलग नहीं है। आँख खोल कर देख लिया तो परमात्मा और आँख बंद कर देखा तो प्रकृति।

योद्धाः - क्या मैं किसी और की आत्मा को प्रभावित कर सकता हूँ?

भगवान - अगर तुम आत्मा को प्रभावित कर पाओ तो तुम बड़े हो गए और आत्मा छोटी हो गई। तुम सीधे सीधे परमात्मा तो अपने चरणों पर झुकाना चाहते हो। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

योद्धाः - क्या चार सम्प्रदायों के अलावा परमात्मा प्राप्ति का कोई और मार्ग नहीं है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - परमात्मा की ओर जाने वाले सारे मार्ग जो पहले से बने है गलत है। किसी और का मार्ग किसी दूसरे को नहीं पंहुचा सकता। और ये जो तुम जिन चार सम्प्रदायों की बात कर रहे हो इनसे आज तक एक भी नहीं पंहुचा। मार्ग तुम्हें खुद बनाना पड़ता है।

योद्धाः - क्या साधु बने हुए लोग गलत है, क्या वो साधु नहीं है?

भगवान - दाढ़ी मूंछ हटा दो, धार्मिक ड्रेस हटा दो, तिलक हटा दो, शास्त्र हटा दो, चेले चपाटे हटा दो, रटी हुई प्रार्थनाएं हटा दो। अब उनसे कहो ज्ञान दो। तब पता चलेगा साधु था या साधु के वेश में रोटी कमाने वाला भिखारी? मुक्त व्यक्ति कहीं भी नहीं बंधता। न तो वेशभूषा में न ही परम्पराओं में।

योद्धाः - धार्मिक कैसे हुआ जाता है?

भगवान - धार्मिक हुआ जा ही नहीं सकता। क्योंकि जिसे धर्म मिलता है उसकी मौत पहले ही हो जाती है। या तो वहां तुम होते हो या धर्म। दोनों एक ही समय में नहीं होते। जिस प्रकार प्रकाश कभी भी अंधकार को नहीं देख सकता है उसी प्रकार तुम कभी भी धर्म को नहीं देख सकते हो क्योंकि तुम्हारे होने का ही तो दूसरा नाम अज्ञानता है, उपद्रव है। **और तुम्हारे मिटने का नाम ही तो धर्म, बुद्धत्व, बोध, जागरण है।** तो अगर परमात्मा को जानना है तो अभी मिटो।

योद्धाः - प्रकृति की ओर हर किसी का मन क्यों आकर्षित होता है?

भगवान - क्योंकि यहां परमात्मा ही छुपा है और यही खुदा का ढंग है तुम्हें बुलाने का। अगर तुम्हें पक्षियों के संगीत मे उस खुदा के घुंघरू की धुन सुनाई देने लगे या नदियों के कल-कल में कृष्ण की बांसुरी की धुन सुनाई देने लगे तो मानना कि प्रकृति ने जो जाल तुम पर फेंका था तुम उस में फंस चुके हो। अब बच के निकलने का कोई भी मार्ग नहीं है। अगर तुम उस जाल

से बचना चाहते हो तो मन्दिर-मस्जिद में ही छुपे रहों। वहीं तुम बच सकते हो। क्योंकि **"परमात्मा-खुदा, मंदिर-मस्जिद छोड़कर सभी जगह बिखरा हुआ है"।** अच्छा होगा कि हिन्दू-मुस्लिम ही बने रहो खुदा के चक्कर में पड़ गए तो पागल हो जाओगे। अच्छा तो यह होगा कि कभी कभार मन्दिर-मस्जिद हो आया करो। ज्यादा हो तो गीता-कुरान को माथे से लगा लिया करो। तिलक लगाया करो, जाली टोपी पहना करो और गहन निद्रा में विश्राम कर के स्वयं को धार्मिक माना करों।

योद्धाः - हम उसका मन्दिर कहां बनाए और कैसा बनाए है?

भगवान - अगर खुदा है तो हर कहीं है तो उसके लिए जगह कैसे निर्धारित करोगें? और अगर खुदा नहीं है तो कहीं भी नहीं है तो फिर मंदिर बनाकर परमात्मा कहां से बिठाओगें? सारा विश्व उनका मंदिर है। तुम्हें बस अपनी आंखें खुली रखने की जरूरत है।

योद्धाः - गर्भ में बच्चा रोता है और भगवान से कहता है कि मुझे यहां से बाहर निकाल में पूरा जीवन तेरी भक्ति करूंगा। क्या यह वाक्य सही है?

भगवान - जिनको अपने बारे में कुछ नहीं पता वो मृत्यु से पहले और बाद के नक्शे हाथो में लिए घूमते है। ये केवल मूर्खतापूर्ण वक्तव्य है। भगवान ने इतना सुंदर जीवन दिया है और तुम्हारे मूर्ख धर्मगुरु उसी का तिरस्कार करने के लिए व्यर्थ ही जीवन की निंदा करते हैं। **वास्तव में महात्मा ही परमात्मा का सबसे बड़ा दुश्मन है।**

योद्धाः - अगर हमें खुदा मिल भी जाए तो हम उसे कैसे पहचानेंगे?

भगवान - जिस दिन तुम्हारे भीतर का सूर्य उगेगा उस दिन तुम स्वयं को भी पहचान लोगे और उस परमात्मा को भी पहचान लोगे। और देखोगें कि दोनों में तिल मात्र का भी भेद नहीं है। **दोनों ही एक दूसरे के कन्धे पर चढ़े बैठे है।**

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - बुद्धत्व क्या है? प्रबुद्ध होना क्या है?

भगवान - केवल स्वयं को जानना और तुम बने बनाये बुद्ध हो। पहले हिन्दू-मुस्लिम होने में पागल हो रहे थे अब बुद्ध होने में पागल मत हो जाना। तुम्हें कुछ नहीं होना। तुम स्वयं में पूर्ण हो।

योद्धाः - हम कौन सी प्रार्थना करें जिससे परमात्मा प्रसन्न हों?

भगवान - तुम्हारी सारी प्रार्थनाएं व्यर्थ ही तो है। तुम प्रार्थना के नाम पर करते क्या हो? धन दे, मान दे, पद दे, प्रतिष्ठा दे। प्रार्थनाः- नाम है प्रेम का! **लेकिन भिखारियों ने तुम्हे भीख मांगना ही सिखा दिया। तुम्हें भिखारी ही बना दिया।** कैसे करोगें तुम प्रार्थना?

योद्धाः - हम कौन सा शास्त्र पढ़ें जिससे हमें भी धर्म का ज्ञान हो जाऐं, हम इनलाइटेंड हो जाऐं?

भगवान - शास्त्रों में पंक्तियों के बीच का खाली स्थान पढ़ो। यह जो पुस्तक तुम पढ़ रहे हो केवल इसके मुख्य पेज का पिछला वाला पेज पूरी तरह से एक-एक अक्षर पढ़ो। इनलाइटेंड एक क्षण में तुम हो सकते हो। केवल तुम्हारी प्रज्ञा प्रगाढ़ होनी चाहिए।

योद्धाः - क्या मैं परमात्मा बन सकता हूँ?

भगवान - कहते है चिड़िया कभी बाज नही बन सकती। तुम मेरे साथ दस कदम चल कर तो देखो मैं तुम्हें पूरा-पूरा परमात्मा न बना दूं तो कहना।

योद्धाः - राम नाम की किताब बनाते है लोग, क्या वो सही नहीं है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - **नहीं!** इससे तो ये पता चला कि तुम करोड़ों नाम ले चुके हो कुछ भी नहीं हुआ। जो अब तक के करोड़ों से नहीं हुआ वो आगे के करोड़ों से कैसे होगा? राम मतलब तुम्हारा जीवन और कुछ भी तो नहीं। जीवन को जीना है तुम्हें फल मिला उसे खाना है लेकिन तुम मूढ़ता के कारण उस फल को ही पूजने लग गए।

योद्धाः - कौन सा धर्म उत्तम है?

भगवान - बिमारियां अलग-अलग होती है लेकिन स्वास्थ्य एक ही होता है। उसी प्रकार मूर्खता रुपी विचारधाराओं को तुमने धर्म का नाम दे रखा है वो धर्म नहीं है। धर्म एक ही होता है सत्य का बोध, स्वात्म का अनुभव हो जाना, तुम्हारें हृदय में संसार मात्र के लिए प्रेम हो जाना। और यह जो धर्मों को नाम दिए है न तुमने तथाकथित 365 प्रकार के यह केवल बिमारियां मात्र है इनका धर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है।

योद्धाः - हमारे इस जीवन का क्या उद्देश्य है?

भगवान - तुम्हारे पास एक ही विकल्प था सदियों से। वह यह था कि तुम पुराने जन्मों-जन्मों के पापी हो और यह जीवन तुम्हें दुःख भोगने के लिए मिला है और मरने के बाद ही स्वर्ग या जन्नत में जाकर तुम सुखी हो सकते हो। आज हजारों वर्षों बाद मैं तुम्हारे सामने एक नया विकल्प खोल रहा हूँ कि यह जन्म तुम्हें सुख भोगने के लिए, आनंद से रहने के लिए, उत्सव मनाने के लिए मिला है। आनंद तुम्हारा स्वरूप है और तुम चाहो तो इसी जीवन को स्वर्ग बना लो। तुम्ही परमात्मा हो और तुम्हारे अलावा कोई परमात्मा कहीं नहीं बैठा है। अब तुम्हारी जो इच्छा हो वही मानो! चाहे यहा दुःखी रहो और मरने के बाद स्वर्ग की कल्पना करो या मेरी बात मान कर आज ही सुखी हो जाओ।

योद्धाः - क्या ज्ञान को लिखना पढ़ना चाहिए?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - **नहीं!** ज्ञान को अपनी आत्मा बना कर ओढ़ लेना चाहिए। वो ज्ञान तुम्हारे चेहरे पर नाचता गाता नजर आना चाहिए।

योद्धाः - दुनिया कैसी होनी चाहिए?

भगवान - सोचों! अगर दुनिया भर के सारे बुद्धिजीवी मिलकर एक ऐसी दुनिया की संरचना करे जहां किसी भी देश की सीमा न हो, न जवान तैनात हो, न रक्षा के लिए जहाज या तोपें हो। और पूरी दुनिया में जो देश का सबसे बड़ा बजट रक्षा व्यय पर खर्च होता है वो धन लोगों की सेवा में लगाया जाए तो सोचो वो दुनिया बेहतर होगी या आज की दुनिया? मेरी दृष्टि में दुनिया को नेताओं की नही बुद्धिजीवी वर्ग की आवश्यकता है। अगर गूगल करो तो पता चलेगा कि पिछले 50 वर्षों में दुनिया भर में देश की सीमाओं की रक्षा के नाम पर 40 वर्ष मनुष्य ने युद्ध में बिता दिए। क्या हम ऐसे समाज को धार्मिक कहेंगें? क्या कृष्ण, जीजस, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, नानक, कबीर ने ऐसा ही समाज बनाने की कल्पना की थी?

योद्धाः - क्या जन्म-मृत्यु पूर्व निर्धारित है?

भगवान - शायद तुम्हारे लिए तो हाँ। और जिन्हें सत्य मिल गया उनके लिए कदापि नहीं। दरसल तुम जो-जो धारणाएं पालते हो वो-वो तुम्हारें लिए दुनिया में सत्य हो जाती है। क्योंकि तुम परमात्मा हो। तुम अगर यह धारणा पालोगें कि तुम 40 वर्ष में ही बूढ़ें हो गए तो तुम हो ही जाओगें। और अगर तुम यह मानतें हो कि तुम 85 वर्ष में भी जवान की तरह भाग दौड़ रहे हो तो तुम जवान ही हो।

योद्धाः - हमारा दीपक कहां से जलेगा?

भगवान - किसी जलते हुए दीपक के पास चले जाओं वहां बैठे-बैठे स्वयं ही जल जाएगा। इसी को कहते है सतसंग। न कि आरती करने को।

parmatmana the ultimate wisdom

योद्धाः - बुद्धत्व क्या है?

भगवान - बुद्धत्व एक प्रकार की समझ का नाम है जिसके प्राप्त होने के बाद केवल इतना पुनः स्मरण हो जाता है कि अब न कहीं जाना है और न कुछ पाना है। लेकिन ध्यान देना जिस दिन तुम्हें बुद्धत्व प्राप्त होगा उस दिन उसे पाने वाला नहीं बचेगा। क्योंकि तुम क्या हो? केवल एक माने हुए विचारों के, अहंकार के समूह! और जब यह अहंकार गिरेगा वहां कुछ भी न बचेगा। तुम भी नहीं।

योद्धाः - क्या हम परमात्मा को पा सकते है?

भगवान - परमात्मा, सत्य, खुदा, विराट, अल्लाह! इतना नजदीक है कि वो तुम्हारे हाथों पर ही विराजमान है लेकिन तुम मुठ्ठी बांधना चाहते हो और वो छिटक जाता है। और जब तुम कुछ भी पकड़ने की आकांक्षा नहीं रखते तो वो वस्तु स्वाभाविक ही तुम्हारे पास होती है लेकिन जैसे ही तुम उस वस्तु को पकड़ने की और उसके मालिक बनने की इच्छा व्यक्त करते हो वो वस्तु तुमसे हमेशा के लिए दूर चली जाती है। हाथ खोलो और देखो कि तुम्हारे हाथों पर प्रकाश विद्यमान है या नही? और अब मुठ्ठी बंद करो और देखो प्रकाश गायब।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या तुम परमात्मा दिखा सकते हो?

भगवान - **हाँ!** तुम देखने वाले को खोज लाओ परमात्मा एक क्षण में दिखा दूंगा।

योद्धाः - आत्मा शरीर के कौन से हिस्से में होती है?

भगवान - पूरे शरीर में। जैसे पूरे वातावरण में वायु रहती है।

योद्धाः - हमें कैसे ज्ञात होगा कि अब हमे वो मिल गया है?

भगवान - जब तक अपने ही कपड़े फाड़कर, चिल्लाकर और नाचकर कहने की इच्छा न हो कि तुमने उसे पा लिया है तब तक बिलकुल मत मानना कि तुम्हें वो मिल गया है। अगर पहले ही घोषणा कर दी तो मानना वो हिन्दू मुस्लिम होने की ही तरह झूठ ही होगी।

योद्धाः - जब मौत निश्चित ही है तो जिन्दगी से इतनी आसक्ति क्यों?

भगवान - तो क्या इसका मतलब यह मान ले कि पैदा होते ही बच्चे को अर्थी पर लिटा दें? गंगा को पता है सागर में जाकर अपने ही अस्तित्व को खोना पड़ेगा लेकिन सागर मिलन की चाह अपनी मौत से भी नही घबराती।

योद्धाः - कौन सी प्रार्थना उत्तम है?

भगवान - अगर तुम्हारी आँखें नम हो, स्वयं के आनंद में हो तो उससे सुन्दर कुछ भी नहीं। कोई प्रार्थना नहीं, कोई नमाज नहीं, कोई यज्ञ नहीं, कोई दान नहीं। उसे तुम्हारी नम आँखें क्षण भर में देख लेगी। तुम्हारी निगाह झुकी तो हो गई प्रार्थना।

parmatmang
the ultimate wisdom

योद्धाः - इस बात का क्या सबूत है? कि तुम जो कहते हो कि समाज धार्मिक नहीं है, वो सही है?

भगवान - अगर घर में अंधेरा दिखे तो बिल्कुल विश्वास मत करना कि दीपक जल रहा होगा। वो दीपक नहीं होगा दीपक का चित्र होगा। अगर वास्तव में ही दीपक जलता हो तो अँधेरा रह ही कैसे सकता है। और यही प्रमाण है कि तुम्हारें धर्म खोखले है।

योद्धाः - मुझे मुक्ति कब और कैसे मिलेगी?

भगवान - वो तो आज ही मिल सकती है लेकिन तुमने जो यह मुझे की धारणा पकड़ रखी है उसे त्यागना पड़ेगा। क्योंकि जहां मुक्ति होगी वहां मुझे कहने वाला नहीं होगा।

योद्धाः - क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई को एक दूसरे से खतरा है?

भगवान - **हाँ!** सोया हुआ व्यक्ति कब किसी की छाती पर पांव रख दें क्या पता। सोए हुए मनुष्य से खतरा है।

योद्धाः - गुरु शिष्य को कहां तक ले जाता है?

भगवान - गुरु कहीं भी नहीं ले जाता है और अंगुली पकड़कर ले जाने वाला गुरु ही नही होता वो पाखंडी तो बस उंगली पकड़कर यूं ही घूमाता रहता है। असली गुरु तो बस इशारा मात्र करता है। तैरना सिखाने वाला गुरु क्या करता है केवल तुम्हें पानी में धक्का ही तो मारता है तैरना तो तुम स्वयं ही सीख लेते हो। गुरु वो जो शिष्य को सभी से छुड़ा दे और अंत में स्वयं से भी मुक्त कर दे।

योद्धाः -जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश विधि के हाथ है?

भगवान - इसी मूर्खता भरी सोच ने भारत को भाग्यवादी बना दिया और पूरा भारत भाग्य के ही भरोसे बैठ गया। और यही कारण है कि आज तक भारत पिछड़ा हुआ है। यहां कुछ भी किसी के हाथ नहीं है यह सभी तुम्हारे हाथ है। भाग्य से तुम्हे यह जीवन मिला है अगर नहीं मिलता तो शिकायत भी करने का कुछ उपाय नहीं था। **"तो उठो और अपना भाग्य खुद लिखो"।**

योद्धाः - क्या धर्म परिवर्तन से कोई लाभ होता है?

भगवान - हाँ! जब तुम एक पिंजरे से ऊब जाते हो तो दूसरा पिंजरा अच्छा लगता है। मुर्दे को कंधे पर उठाते समय लोग कंधे बदलते है न। लेकिन लाश का बोझ तो उतना ही रहता है कम थोड़े ही होता है।

parmatmang
the ultimate wisdom

योद्धाः - परमात्मा, खुदा! आज क्यों नहीं दिखता?

भगवान - क्योंकि तुमने नकली परमात्मा गढ़ें है। और तुम उसी नकली विचारधारा का चश्मा लगा कर उसे देखना चाहते हो। परमात्मा, खुदा, भगवान, अल्लाह! तो नग्न खड़ा है संसार में। और कंही दूर खड़ा है ऐसा मत समझना। वो तो बिखरा पड़ा है रेत के कणों की भांति। तुम्हें देखना ही नहीं आ रहा है तो अपनी आंखे साफ करो। अपनी आँखों पर से हिन्दू मुस्लिम आदि 365 प्रकार के धर्मो के चश्मे हटाओ।

योद्धाः - क्या हमें भी किसी बुद्ध की नकल करनी चाहिए और वैसा ही बनने की कोशिश करनी चाहिए?

भगवान - सृष्टि का एक भी पत्ता दूसरे के जैसा बनने की कोशिश नहीं करता और तुम दूसरा होना चाहते हो। तुम बस आँखे खोलो और तुम केवल तुम जैसे हो जाओ। पूरे अस्तित्व में एक जैसी दो वस्तुएं कभी भी नहीं मिलेगी जो परमात्मा की बनाई हुई होंगी और तुम बार-बार बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीजस, नानक बनने की चाह में अपना होना भी भूल जाते हो।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः -मरने की विधि क्या है?

भगवान - **"मरो हे जोगी मरो, मरो मरन है मीठा। तिस मरनी मरो जिस मरनी गोरख मर दीठा"।**

योद्धाः - क्या बुद्ध पुरुषों के संग से कुछ लाभ होता है?

भगवान - जिस प्रकार एक जलती हुई मोमबत्ती से बिना जली मोमबत्ती भी जल सकती है उसी प्रकार बुद्ध पुरुषों के संग से अबुद्ध भी बुद्ध बन जाते है।

योद्धाः - धर्म की परिणीति तक पहुंचना क्या है?

भगवान - **"तुम होना चाहते हो और धर्म मिटने की कला है"।** अगर कुछ होना चाहते हो तो केवल हिन्दू-मुस्लमान ही हो जाओं क्योंकि धर्म में तो तुम कहीं के न बचोगे। धर्म कुछ बनने का नाम नहीं मिटने का दुस्साहस है। तुम मरो और देह बचे तभी तुम धर्म की परिणीति तक पहुंच सकते हो। तुम अपने भीतर से हटो तो ही वो धर्म वहां विराजमान होगा।

योद्धाः - परमात्मा प्राप्ति में कौन बाधक है?

भगवान - परमात्मा प्राप्ति में केवल तुम ही बाधक हो। परमात्मा तुम्हारी मृत्यु पर तुरंत प्रकट होता है। लेकिन देह की मृत्यु पर नहीं! मैं की मृत्यु पर। तुम्हारा विसर्जन और उसका आगमन एक ही साथ घटता है। **"मिटो तो पाओ"।** तुम्हारा मरना हो जाये और उसका जन्मना हो जाये।

योद्धाः - सत्संग से क्या लाभ होता है?

भगवान - बुद्धूओं का संग तुम्हें बुद्धू बनाता है और बुद्ध का संग बुद्ध बनाता है। बुद्ध संक्रामक रोगी होते है उनके पास बहुत ही सोच समझ कर जाना चाहिए। क्योंकि पागल के साथ बैठोगे तो तुम भी पागल ही बनोगे।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - आत्म दशर्न का आसान उपाय?

भगवान - **"तू मरेगा तभी तो तरेगा"।**

योद्धाः - क्या शरीर के साथ ही आत्मा भी मिल जाती है?

भगवान - शरीर माता-पिता से प्राप्त होता है लेकिन आत्मा की यात्रा तुम्हे स्वयं करनी होती है। झूठ है वो सारे वक्तव्य जो तुम्हें समझाते है कि आत्मा तुम्हें जन्म से ही मिल जाती है। अपनी पुस्तकों में संशोधन करो।

योद्धाः - क्या धर्म गीता या कुरान से नहीं प्राप्त होता?

भगवान - धर्म के लिए अज्ञात में छलांग लगानी होती है। धार्मिक होना साहस का कार्य है। जिसे तुम लेकर पैदा होते हो वो धर्म नहीं है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बोध, जैन आदि 365 प्रकार के नाम धर्म के नहीं है। धर्म किसी भी पुस्तक से नहीं जीवन को जी कर मिलता है।

योद्धाः - संसार में सभी कुछ बढ़ रहा है लेकिन धर्म घट रहा है। क्यों?

भगवान - क्योंकि धर्म नासमझों के हाथ में आ गया है। धर्म अंधे की लाठी बनकर रह गया है। ज्यादातर भूखे, नंगे, भिखमंगे, कामचोर प्रवर्ति के लोग, अपराधिक प्रवर्ति के व्यक्ति किसी भी धर्म का चोगा ओढ़ कर स्वांग रचाकर धर्म की बागडोर अपने हाथ में थाम लेते है। और धर्म को गलत दिशा में ले जाते है। और ये भारत का दुर्भाग्य है। इसलिए ही भारत आजतक पिछड़ा हुआ है। अभी भी समय है अगर तुम सभी ने धर्म का सही अर्थ ना समझा तो तुम सभी का जीवन इसी प्रकार दुःख में बीत जायेगा।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या भगवान या अल्लाह नहीं है?

भगवान - मैंने कब कहा कि भगवान नहीं है। मैं तो बार बार समझा रहा हूँ कि मनुष्य ही भगवान है, खुदा है।

योद्धाः - खुदा से मिलना कैसे संभव है?

भगवान - अपनी आत्मा की आग इतनी प्रज्वलित करो कि वहां उस आग के अलावा कुछ भी न बचे। बस वो शुद्ध आग ही तुम्हे परमात्मा से मिला देगी।

योद्धाः - कौन सा धर्म उत्तम है?

भगवान - मैं तुम्हारा कैदखाना नहीं बदलना चाहता हूँ मैं तो तुम्हें कैदखानों से ही मुक्त करना चाहता हूँ। और जो धार्मिक सोच तुम्हें कैदखानों से ही मुक्त कर दे वही धर्म है और वही धर्म उत्तम है।

योद्धाः - खुदा कैसा दिखता है?

भगवान - मैने देखा है उसे! लेकिन फिर भी तुम्हे समझा न सकूँगा कैसा दिखता है। हाँ लेकिन दिखा जरूर दूंगा। फिर तुम स्वयं जान लेना और देख लेना कि वह कैसा है।

योद्धाः - तुम क्या प्रयास कर रहे हो?

भगवान - मैं असम्भव के विरुद्ध लड़ रहा हूँ देखते है कौन-कौन साथ खड़ा होता है। शायद संसार में सूर्योदय हो ही जाये। शायद तुम्हारी भी जन्मों जन्मों की दौड़ मिट जाये।

योद्धाः - अमृत क्या है?

भगवान - मैं जो तुम्हें पिला रहा हूँ उसे कंठ तक पीते जाओ। वही अमृत है जो तुम्हें जन्म मरण से मुक्त कर देगा। और बाकी तुम्हारी किताबों में जो अमृत की कथा है वो सब झूठ है। बच्चों की मीठी गोली है। आध्यात्म की भाषा गूढ़ होती है बालक बुद्धि वाले उसे नहीं समझ सकेगें।

योद्धाः - तुम संसार को कैसा बनाना चाहते हो?

भगवान - मैं चाहता हूँ सभी प्रकार की धर्मान्धता का अंत हो। मैं चाहता हूँ कि धर्म के नाम पर जो तुमने कटुताओं को हृदय में दबा रखा है उसका अंत हो। मनुष्य आपस में प्रेम करे। सभी एक ही सिद्धांत को माने। **"प्रेम हमारा धर्म है मनुष्य हमारी जाति"!**

parmatmang
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या धर्म दिया या लिया जा सकता है?

भगवान - धर्म को दिया जा सकता है लेकिन शर्त यह है कि वो तुम्हारे पास होना भी चाहिए। लेकिन वैसे नहीं जैसे तुम हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बना देते हो। धर्म तो एक आग है जो जलाई जाती है स्वयं के भीतर। अगर तुम्हे भी जलानी है तो उससे थोड़ी सी आग ले आओ जिसमे ये आग जल रही हो। लेकिन ध्यान से! धर्म मिलने के बाद धर्म ही बचता है। तुम ना बचोगें।

योद्धाः - तुम कैसा धर्म लाना चाहते हों?

भगवान - मैं एक सार्वभौमिक धर्म को इस दुनिया में लाना चाहता हूँ जिसमे हिन्दुओं की सी सहनशीलता हो, इस्लाम का सा भाई चारा हो, ईसाइयों की सी दया भावना हो, बुद्ध की करुणा हो तथा महावीर की अहिंसा हो। आज समाज की मांग है ऐसा धर्म। अगर हम पृथ्वी को, आने वाले समाज को जीता हुआ, पनपता हुआ, खुशहाल देखना चाहते है तो यह अति आवश्यक है। बस ऐसे ही गुणों से भरपूर होना चाहिए धर्म।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - कौन सा नाम जपें, किसकी पूजा करें जिससे हम सुखी हो जाए?

भगवान - दुनिया का सबसे बड़ा झूठ यही है कि तुम्हे कोई दूसरा व्यक्ति, नाम, मंत्र या देवता सुखी करेगा।

योद्धाः - पुराने धर्मों में गलत क्या है?

भगवान - कितना बड़ा परिवर्तन किया होगा तुम्हारे अवचेतन मन में जब तुम एकदम जीवन खोजना छोड़ मौत खोजने लग जाते हो धर्म के नाम पर। और इससे भी ज्यादा गलत कुछ हो सकता है क्या? और तुम्हारे धर्मो में फेर बदल नहीं उन्हें उखाड़ फैंकने की आवश्यकता है। ताकि जीवन का सकारात्मक धर्म तुम्हे दिया जा सके।

योद्धाः - क्या किसी मंदिर की मूर्ति गलत है?

भगवान - अगर परमात्मा की बनाई हुई मूर्ति में ही तुम्हे कुछ नहीं दिखता तो इन्सान की बनाई मूर्ति में तुम्हे ईश्वर कैसे दिख सकता है? तुम केवल दिखावे के ही धार्मिक हों। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन! सभी तो किसी न किसी मूरत को ही पूज रहे है। तो इन मूर्तियों को पूजता हुआ संसार क्या तुम्हे धार्मिक दिखता है? क्या तुम धार्मिक हो?

योद्धाः - गरीब के घर पैदा होने में और अमीर के घर पैदा होने में क्या प्रारब्ध कर्मो का हाथ है?

भगवान - अगर तुम्हारें मूढ़ धर्म गुरु धन को महत्व न देते तो यह प्रश्न ही न होता। गेंदे का फूल भी उतना सुंदर है जितना गुलाब का। तुमने धन को महत्व दिया है तो तुम्हें झूठें उत्तर तो मिलेगें ही। हाँ उन मूढ़ों को यह नही ज्ञात कि धन कैसे कमाया जाता है इसलिए उन्होंने इसे प्रारब्ध कर्मो पर जोड़ दिया।

योद्धाः - धन के लिए किस देवी-देवता की पूजा करें?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - अपनी बुद्धि को साफ करों और पढ़ लिखकर कुछ काम करों।

योद्धाः - सही में ब्राह्मण कौन है? क्या हिन्दू जाति वाला नहीं?

भगवान - ब्राह्मण होना अलग है और पंड़ित होना अलग। ब्रह्मज्ञानी ही ब्राह्मण कहलाने योग्य होता है। लेकिन ध्यान देना ब्रह्मज्ञानी हिन्दू या मुस्लिम नहीं होता। ब्राह्मण यानी जो सभी में ब्रह्म को देखे। ब्रह्म और खुदा ये वो शब्द है जिसकी ना तो कोई तस्वीर है और ना ही जिसका कोई आकार है। या यूं कहें कि ये वो है जिसके ही सारे आकार है।

योद्धाः - हमें कुछ भी नया क्यों अपनाना चाहिए?

भगवान - आज वो समय आ गया है कि आप पुनः स्वयं पर द्रष्टि दौड़ाए और सोचे अपने बारे में। कि क्या अभी भी आपको धर्म भीरु बनकर रहना है, समाज की रूढ़िवादी विचारधारा को ही ढ़ोना है या उठ खड़े होकर सत्य धर्म की नींव पर एक इमारत अपनी भी बनानी है। अगर आप आज भी नहीं जाग पाए तो न जाने फिर ये अवसर कब कितने जन्मों बाद आपको प्राप्त हो। कितने जन्मों बाद मैंने इसलिए कहा कि ये बात बिलकुल सत्य है कि तुम पुनः आओगे और मनुष्य बनकर ही आओगे। नाम अलग होगा, जात अलग होगी लेकिन तुम ही होगे। अगर तुम्हारे भीतर जरा सी भी प्यास है उसकी तो जरूर आओगे। फिर तुम्हे कोई बुद्ध मिले या न मिले। इसलिये आज ही धार्मिक हो जाओ, आज ही जाग जाओ।

योद्धाः - क्या गुरु आदि को दान देनें के लिए लोन लेना सही है?

भगवान - अब तुमने ढ़ोल गले में लटका ही लिया है तो बजाना ही पडेगा। जहां तुमने एक मूढ़ता की वहीं पीछे-पीछे सारी मूढ़ताएं चली आती है। इसीलिए कहतें है कि **"बुद्ध का संग बुद्ध बनाता है और बुद्धूओं का संग बुद्धू"।**

योद्धाः - क्या धर्म बदलने से कोई लाभ होगा?

भगवान - तुम में से किसी को भी धर्म परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है धर्म बदलकर तुम कुछ भी न पाओगे। मुसलमान आरती गाए तो तुम्हें क्या लगता है उसे राम मिल जाएंगे? नहीं! उसी प्रकार हिन्दू अगर नमाज पढ़े तो तुम्हे क्या लगता है उसे अल्लाह मिल जाएंगे? नही! हमें धर्म नहीं बदलना! बल्कि एक दूसरे की आत्मा को अपने भीतर समाहित करना है तभी सच्चे अर्थों में हम धार्मिक हो सकते है।

योद्धाः - आज मुख्य चिंता क्या है?

भगवान - आज के समय में अगर कुछ भी चिंता करने योग्य है तो वो यह है कि हमारा देश धर्म के क्षेत्र में अग्रणी होते हुए भी धर्म के पतन का कारण बन रहा है। और उसका एक ही कारण है कि धर्म गुरुओं ने धर्म को पहचानना ही छोड़ दिया है और धर्म को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई की कन्धराओं मे कैद कर रखा है। अच्छा होता कि सभी धर्म गुरु मिल कर लोगो को समझाते कि धर्म का मतलब प्रेम से होता है न कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई से। लेकिन ऐसा समझाया तो उनकी दुकान बंद हो जाएगी। लोग धर्म के नाम पर लड़ते रहे इसमें धर्म गुरु का और राज नेताओं का लाभ है।

योद्धाः - क्या मैं मरने के बाद मुक्त हो सकता हूँ?

भगवान - जीवन में ही मुक्त हुआ जाता है मर कर नहीं। क्योंकि जो मर रहा है अगर वो बंधन में है तो मर कर भी बंधन में ही रहेगा। इसलिए अगर मुक्त होने की अभिलाषा है तो आज ही किसी मुक्त का हाथ पकड़ लो।

योद्धाः - धर्म या जीवन! दोनों में से क्या आवश्यक है?

भगवान - एक जगह गोलियां चली चार व्यक्ति मरे। पोस्टमार्टम हुआ रिपोर्ट निम्न प्रकार से आई। पहले के भीतर से आवाज आई राम, दूसरे के भीतर से आवाज आई अल्लाह, तीसरे के भीतर से आवाज आई बुद्धत्व और चौथें के भीतर से आवाज आई रोटी। आगे अगर तुम समझदार होगे तो पूरा समझ ही जाओगे।

योद्धाः - हमारा देश कब उन्नत होगा?

भगवान - अगर कुछ बुद्धिजीवी लोग सामने आऐ और वो मिलकर लोगो को समझाए कि धर्म यह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं है जो तुम समझ रहे हो। यह सभी पाखण्ड़ है तो मैं मानता हूँ कि निश्चित ही एक क्रांति का जन्म होगा। और वो ही क्रांति देश को सही मार्ग पर

ले जाएगी। आज भारत में मंदिर या मस्जिद बनाने की आवश्यकता नहीं है एक क्रांति की आवश्यकता है। ये जो तुम दीपावली के नाम पर दीए जला रहे हो या हज के नाम पर स्वयं को गुमराह कर रहे हो तो ये तुम दूसरे को नहीं स्वयं को ही धोखा दे रहे हो।

योद्धाः - ज्ञान क्या है?

भगवान - तुम्हारे होने की अवस्था का नाम। तुम कुछ बोलो तो ज्ञान झरे, तुम चलो तो ज्ञान झरे, तुम्हारा हर कार्य ज्ञान मय हो। तुम ज्ञान की एक खुली किताब हो जाओ।

योद्धाः - क्या कर्मकांड आवश्यक है?

भगवान - **हाँ!** इससे पता चलता है की आप कितने मूढ़ है। कालिदास अगर कुछ ना बोलता तो कैसे पता चलता कि वो महामूर्ख है।

योद्धाः - धार्मिक कट्टरता से क्या हानि होती है?

भगवान - अगर हम चाहते है कि हमारी आने वाली पीढ़ी एक अच्छे समाज में रहे और सुखी रहे तो हम सभी को यह सोच बदलनी होगी कि हिन्दू सबसे पुराना धर्म है और एक दिन पूरी दुनिया हिन्दू हो जाएगी या इस्लाम भाई चारे को धर्म है और दुनिया को इस्लामिक होना चाहिए या मिश्नरी सेवा भाव का धर्म है तो दुनिया क्रिश्चन होनी चाहिए। नही! हिन्दू से सहिष्णुता, इस्लाम से भाईचारा और क्रिश्चन से सेवा, बोध से करुणा, जैन से अहिंसा आदि गुणों को लेकर ही एक नया समाज आगे बढ़ सकता है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - आज धर्म क्या हो गया है?

भगवान - आज धर्म केवल भ्रमात्मक हो चुका है। आज धर्म केवल पुरानी धार्मिक मान्यताएं, सिद्धान्त, रूढ़िवादी परंपरा, विचारधारा और सोए-सोए अनुष्ठान ही होकर रह गया है और

तुम सोचते हो इसके दम पर कोई भी धर्म जीवित रह सकता है? नहीं! यह तुम्हारी भूल है। धर्म को जीवित करने के लिए किसी को तो अपने प्राण फूंकने पड़ेगे इसमें। तुम उठो और आगे बढ़ों और पुनः इसे जीवित करो।

योद्धाः - पंडितों ने बहुत सुन्दर पुस्तकें लिखी जिन्हें हम शास्त्र कहते है क्या उससे भी कुछ न होगा?

भगवान - **नहीं!** क्योंकि जब तक लिखने वाले की ही ज्योंति न जली हो, लिखने वाले का ही हृदय जाग्रत न हो तब तक शब्दों में प्राण नहीं आते। और जब तक शब्दों में ही प्राण न हो तब तक वो तुम्हारें प्राणों को भी झंकृत नहीं कर सकते।

योद्धाः - धर्म की अनुभूति से क्या मतलब है?

भगवान - जब तक तुम्हारा धर्म तुम्हे ईश्वर की अनुभूति न करा दे वो बेकार का धर्म है फिर चाहे तुम मन्दिरों मे नाचो, दिन-रात कथाएं सुनो, पांचो समय नमाज पढ़ो या प्रत्येक रविवार अपने अपने धर्म स्थलो मे जाओ। **"वो अल्लाह जर्रे जर्रे में रसा-बसा नजर आना चाहिए"।**

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या गीता या कुरान पढ़ना उचित नहीं है?

भगवान - जो केवल पुस्तकों को ज्ञान के लिए पढ़ता है वो उस मजदूर की भांति है जो दिन रात चीनी की बोरियों को ढ़ोता है पर जिसने कभी भी चीनी की मिठास को नही जाना। धर्म तो एक स्वाद है जो चखने पर ही मिलता है।

योद्धाः - परमात्मा को कहां खोजें?

भगवान - परमात्मा मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे में न मिलेगा। लेकिन जिस दिन वो मिल जाएगा उस दिन मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे में भी तुम उसे देख लोगे। फिर तुम राह में

पड़े अनगढ़ पत्थरों में भी उसके पदचिन्ह खोज लोगे। जिस दिन वो मिल जाता है फिर कौन परवाह करता है संध्या की या नहीं, नमाज पढ़ी या नहीं। जब भीतर मिलन चलता रहता है तो कैसी शिष्टता? और उसे खोजने के लिए बाहर मत भागो केवल मरो। यही विधि है।

योद्धाः - सोए और जागे में क्या भेद है?

भगवान - जिस दिन धर्म और अंधविश्वास में भेद पता चल जाएगा उस दिन तुम सोए और जागे का भेद भी जान जाओगे।

योद्धाः - सन्यास क्या है?

भगवान - तुम्हारें जीवन में संगीत जन्में, नृत्य जन्में। तो तुम बिना किसी विशेष रंग के वस्त्रों के ही सन्यासी हो।

योद्धाः - आज के कथा वक्ता क्या धार्मिक नही है?

भगवान - नहीं! कैसे धार्मिक बनना चाहते हो तुम? कि लोग तुम्हे धार्मिक समझें तुम पर भरोसा करे। ताकि तुम उन्हें धर्म के नाम पर लूट सको। **"बुद्ध तुम्हे कभी भी धार्मिक चिन्हों से सुसज्जित नही मिलेगें और बुद्‌धू रोज सजे सवरे ही मिलेंगे"।**

योद्धाः - क्या धर्म की रक्षा करना सही नहीं है?

भगवान - जिस प्रकार अण्ड़े के भीतर रहने वाला चूजा अण्ड़े के खोल को ही बचाना चाहता है उसी प्रकार सोया-सोया व्यक्ति केवल तथाकथित धर्मों को ही बचाने की बात करता रहता है। वह समझ ही नहीं पाता कि उसके बाहर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, पूर्ण अस्तित्व विद्यमान है। और विराट, परमात्मा, अस्तित्व किसी भी दायरे के भीतर नही आता। इसलिए सारे अंडे फोड़ दो। **"फिर जो बचेगा वह प्रेम ही धर्म है"।**

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या संसार में जो साधु सन्यासी दिखते है उनको परमात्मा मिल चुका है?

भगवान - वो तुम्हे उनका चेहरा देख कर ही पता चल सकता है। क्योंकि जिसको परमात्मा मिल जाता है वो स्वयं में ही पूर्ण हो जाता है। परमात्मा मिलता नहीं है परमात्मा हुआ जाता है। और जो परमात्मा ही हो जाता है वो फिर मंदिर मस्जिद में उसे खोजने क्यों जायेगा?

योद्धाः - कौन सा मार्ग सही है और मंजिल तक पहुंचाता है?

भगवान - उस अस्तित्व को पाने का मार्ग ही नही है। तुम्हे मार्गो से हटकर चलना भी नही है केवल बैठना भर है और यही ध्यान है। परमात्मा को पाने की सभी यात्राएं तुम्हे उससे दूर ही ले जाती है। केवल स्वयं की ओर घूमो! तुम्हें मंजिल वंही मिलेगी।

योद्धाः - परमात्मा की विराटता का हमें कुछ भी अनुभव क्यों नही हो पाता?

भगवान - घर के भीतर से आकाश देखोगे तो आकाश 5-7 फिट का ही दिखेगा क्योंकि खिडकी ही इतनी है। अगर उसकी विराटता देखनी है तो खिडकी से देखना बंद करो और बाहर निकलो। ऐसे ही परमात्मा की विराटता देखनी है तो इन हिन्दू-मुस्लिम रुपी गड्डों से बाहर निकलों। चारों तरफ उसी का हुस्न बिखरा पड़ा है। **"परमात्मा, खुदा, अल्लाह नग्न खड़ा है तुम्हें देखना ही नहीं आ रहा"।** क्योंकि उल्टे धर्मो के चश्में चढ़ाए बैठे हो तुम। पुरानी धारणाओं को त्याग दों।

योद्धाः - क्या धर्म से देश सुखी होगा?

भगवान - देश में कितने महापुरुष जन्मे क्या देश सुखी या अमीर हो पाया? 5500 वर्षो से तुम जप, तप, व्रत, उपवास और मूर्खता भरे हजारों अनुष्ठान कर रहे हो, तुम्हारे पुरखे भी यही करते मर गए, अब तुम्हारी बारी है। देश धर्म से नहीं धार्मिकता से, जागरण से, शिक्षा से सुखी,

सम्पन्न और अमीर होगा। जितने डंडें और झंड़े तुम धर्म के नाम पर उठा रहे हो अगर इतना ही बोझ तुमने पुस्तकों का उठाया होता तो देश कब का सुखी और सम्पन्न हो गया होता।

योद्धाः - काबा या काशी में जाने से क्या लाभ होता है?

भगवान - तुम बेकार में ही काबा काशी भटक रहे हो। ये क्या कम आंनद की बात है कि तुम हो और जिन्दा हो। अभी और क्या लाभ चाहिए तुम्हें?

योद्धाः - क्या संसार में दिखाई देने वाले धर्म के कारण उपद्रव है?

भगवान - अज्ञानता उपद्रव लाती है ज्ञान नहीं। अभी तुमने अधूरा ज्ञान जाना है वह उपद्रव का कारण है। मैं तुम्हे पूर्णता को ओर ले जा रहा हूँ कि तुम्ही ईश्वर हो, परमात्मा हो, खुदा हो। ये अनुभव हो जायेगा तो सारा उपद्रव तुम्हारे भीतर से मिट जायेगा।

योद्धाः - मुक्ति के लिया क्या आवश्यक है? दान, जप, तप, व्रत?

भगवान - तुम कुछ भी करो ज्ञान के बगैर मुक्ति घटित होना संभव नहीं है। लेकिन ज्ञान से तात्पर्य तुम पुस्तकों को पढ़ने से ही मत समझ लेना। पुस्तकों से कब किसको ज्ञान हुआ है। जिस प्रकार एम बी ए पास करने के बाद हम ये नहीं मान सकते की वो व्यक्ति व्यापार करने में निपुण है उसी प्रकार धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान का कुछ भी लेना देना नहीं है। पुस्तकों का ज्ञान तो दान, जप, तप, व्रत से भी आसान है उससे कुछ ना होगा। अगर मुक्ति का स्वाद चखना है तो इन आड़म्बरों को छोड़ दो।

योद्धाः - क्या सन्यासी के वस्त्र धारण करने से परमात्मा प्राप्ति जल्दी हो सकती है?

भगवान - जब ये समझ आ जाये कि परमात्मा क्या है तो स्वयं समझ आ जायेगा कि वो बोध से मिलता है ना कि वस्त्र बदलने से।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - हिन्दुओं में जो नागा सन्यास है उसका क्या महत्व है?

भगवान - सरकारें भी चाहती है कि तुम किसी भी प्रकार की मूर्खता में पड़े रहो और उनकी सरकार आसानी से चलती रहे। तुम नागा होकर पहाड़ो में रहो या बुर्का पहनकर कालेजो में दिखावा करो। ये केवल तुम्हारी ही मूर्खता को दर्शाता है। धार्मिक होना भीतर की आत्मा बदलने का नाम है ना की ऊपर से रूप बदलने का नाम।

योद्धाः - हमें यह अनुभव क्यों नहीं होता की जीवन ही खुदा है?

भगवान - तुम छोड़ो स्वयं को। मछली को भी पूरा जीवन ये नहीं ज्ञात होता कि जहाँ वो है वहीं सागर है। मछली को उठाकर दो मिनट किनारे रख दो तो तत्क्षण सागर का पता चल जायेगा। तुम भी 10-20 दिन रोज एक घंटा श्मशान में जाकर बैठों। चाहे वहाँ आराम ही करो, जीवन का अनुभव हो जाएगा। दीपक की लौ देखनी है तो रात अंधेरे में ही देख सकते हो। दिन के 12 बजे दीपक जलाएं तो लौ नहीं दिखेगी। विपरीत में ही वास्तविक स्थिति का अनुभव होता है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या मंदिर मस्जिद की रक्षा करना हमारा कर्तव्य नहीं है?

भगवान - जिसे तत्त्व ज्ञान हो गया वो कहीं ईट पत्थर के मंदिर मस्जिद की फिक्र करता है उसके लिए तो सारा जहां उसी का मंदिर है। उसे तो हर जगह उसी खुदा की शराब ढ़लती दिखती है। धर्म के नाम पर तुम सभी ने किया क्या है? दीपक भीतर जलाना था तुम सभी ने मंदिर-मस्जिद में जला दिया। मंदिर-मस्जिद में परमात्मा के प्रेम की शराब ढ़ाली जानी थी तुमने धर्म युद्ध की तैयारी कर ली।

योद्धाः - आखिर मनुष्यों को यह भ्रम ही कैसे पैदा हुआ कि वह मुक्त नहीं है, बंधन में है?

भगवान - तुम्हारे मूर्खता भरे शास्त्रों के कारण। अगर डब्ल्यू एच ओ आज ही ये घोषणा कर दें कि हवा में अमुक बिमारी का वायरस फैल चुका है। सभी टेस्ट करवाओ तो यकीन मानना तुम में से आधी दुनिया उसी वायरस से इन्फेक्टेड पोजिटिव होगी। अगर तुम्हारी छाती पर ये धर्म ग्रन्थ ना रखे होते तो तुम्हे ये भ्रम ही ना होता।

योद्धाः - क्या सूर्य पर भी आत्माएं रहती है? क्योंकि जैसा शास्त्र कहते है की आत्मा को अग्नि जला नहीं सकती?

भगवान - उम्र से बड़े हो गए, लेकिन अभी भी बालकबुद्धि विद्यमान हैं। आत्माएं शब्द ही नहीं होता। मैं का बहुवचन नहीं होता, परमात्मा का भी बहुवचन नहीं होता। आत्मा परमात्मा एक ही है। उसके टुकड़े नहीं होते। तुम आंखें तो खोलो। तुम्हारे अलावा कोई भी आत्मा परमात्मा नहीं है।

योद्धाः - क्या कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं है जो हमें बोध दे सके?

भगवान - नहीं! तुम्हारें तथाकथित 365 प्रकार के धर्मों में कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं है। जिसको पढ़कर तुम उस परमात्मा का साक्षात्कार कर पाओ। शास्त्र कैसे कराएगा? वो तो स्वयं अलमारी में बंद रहता है। हाँ! जिस दिन तुम स्वयं को एक बार भी पढ़ लोगे तो तुम उस खुदा को एक ही क्षण में जान लोगे। इसीलिए तो आज संसार में लाखों शास्त्र होने के बाद भी कोई-कोई विरला ही बुद्धत्व को उपलब्ध दिखता है।

योद्धाः - धार्मिक किताबें कहती है हमें परमात्मा की भक्ति करने के लिए ही जीवन मिला है और तुम कहते हो ये गलत है?

भगवान - एक बार खरगोश ने 100 पैर वाले जानवर से पूछा कि तुम पहले कौन सा पैर उठाते हो? बस फिर क्या था उस दिन के बाद वो जानवर कभी भी चल नहीं पाया। और यही

हुआ है तुम्हारे साथ। इतने सुंदर जीवन को तुम जी ही नहीं पा रहे हो क्योंकि मूढ़ो ने तुम्हे धार्मिक अनुष्ठान करने की सलाह दे डाली।

योद्धाः - हम जीवन में क्या पाए?

भगवान - तुम जीवन में कुछ खोज रहे हो और जीवन तुम्हें खोज रहा है और तुम हो भविष्य में। तुम्हारा उसका मेल ही नहीं हो रहा है। अगर ऐसे ही भविष्य के सपनों में खोय रहे तो जीवन खाली हाथ आये थे खाली ही लौटना पड़ेगा।

योद्धाः - किसी के मरने पर ये क्यों कहते है कि वो भगवान को प्यारा हो गया?

भगवान - मूढ़ो ने पुस्तकें रची सिग्रेचर तो अपना छोड़ेंगे ही। भगवान का मतलब होता है जीवन। जब तक जीवित था तो उसने कभी भी जीवन से प्यार नहीं किया और मरने के बाद तुम कहते हो भगवान को प्यारा हो गया। ये बिलकुल ऐसा ही है कि लोगों के शव को हम सुनते है कि राम नाम सत्य है। जीवित वो भगवान ही था ना तो उसे ही समझ आया और ना ही तुम्हें।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या ज्यादा पैसा कमाना गलत है?

भगवान - **नहीं!** पैसा ज्यादा कमाने वाला व्यक्ति ही पैसे से विरक्त हो पाता है। गरीब के पास कुछ है ही नहीं तो त्याग किसका। ज्यादा पैसा धार्मिकता की पहली सीढ़ी है।

योद्धाः - क्या पुण्य की कामना सुखी करती हैं?

भगवान - कामना का स्वाभाव ही दुःख है कुछ फर्क नहीं पड़ता कि कामना किसकी है। तुम धर्म चाहो या धन! दोनों में दिमाग ये समझता है कि अभी चाह है और जब वो पूरी होगी तब तुम सुखी होगे। यानी तुम्हारा सुख भविष्य में है। और आज अभी तुम दुख में हो।

योद्धाः - क्या जन्म और मृत्यु के बीच में जो जीवन हमें मिलता है उसके बाद भी कोई जीवन होता है?

भगवान - तुम सोचते हो जन्म के साथ जीवन मिलता है और मृत्यु पर जीवन की पूर्णाहुति हो जाती है। नहीं! ये गलत है। जीवन की धारा में जन्म और मृत्यु घटते है। जीवन परमात्मा की तरह अंनत है।

योद्धाः - क्या भगवान हमें सुखी करता है?

भगवान - अगर हम मनुष्य जीवन के पिछले 300-400 वर्षो में से कुछ चुनिंदा साइंटिस्ट को हटा दे तो आज का समाज पुनः जंगलों में आ जायेगा। अब स्वयं सोच लो तुम सुखी किसके कारण हुए हो। और भगवान का मतलब है जीवन! और तुम जीवित हो ये क्या कम सुख की घटना है?

योद्धाः - परमात्मा को खोजने कहां जाए?

भगवान - परमात्मा तुम हो! लेकिन अज्ञान वश तुम उसे ढूंढने दर दर भटक रहे हो लेकिन अपनी जेब नहीं टटोल रहे हो। कहीं नहीं जाना केवल भीतर आना है। और इसी कारण तुम उससे चूक रहें हो। **"जहां हो अगर वहीं तुम वापिस मुड़ जाओं तो शीघ्र ही तुम्हारी खोज पूरी हो जाएगी"।**

योद्धाः - परमात्मा का दीदार कैसे होगा?

भगवान - जब परमात्मा की भी चाह भी ना बचे। खुदा, परमात्मा कोई चापलूसी पसंद व्यक्ति नहीं है जिसकी तुम कीमत लगा रहे हो कि इतना जप, तप हो गया इतनी नमाज पढ़ ली अब कब मिलेगा। खुदा, परमात्मा तो एक सुख की अनुभूति का स्तर है और ये सुख की अनुभूति होती ही तब है जब कोई भी चाह न बचे।

योद्धाः - मन और आत्मा के बीच क्या सम्बंध है?

भगवान - यह केवल शब्दों की कवायत है वास्तव में तो तुम एक ही हो। फिर चाहे स्वयं को काल्पनिक मन कहो या चिर स्थायी आत्मा।

योद्धाः - क्या गरीब और अमीर भाग्य से होता है?

भगवान - **नहीं!** ये सामाजिक व्यवस्था की बात है। और तुम्हारे भीतर कितनी बुद्धि है उसकी बात है। 1947 के लगभग चीन, जापान, हांग कांग, दुबई आदि की प्रति व्यक्ति आय देख लो और भारत की प्रति व्यक्ति आय देख लो। और आज पुनः उनकी आय और भारत की प्रति व्यक्ति आय देख लो। जब तक तुम देश की कमान पढ़े लिखे व्यक्तियों के हाथ में नहीं दोगे तब तक भारत गरीब ही रहेगा।

योद्धाः - हम उसे कहां देखे तथा कैसे देखें?

भगवान - पत्ते पत्ते पर उसी का नूर हिलोरे भर रहा है। क्योंकि तुम सभी ने पुराने चश्में लगाए है और तुम धारणाएं धरकर उसे देखने का प्रयास कर रहे हो और इसी कारण चूक रहे हो। जहां हो वही बस आँखे खोल लो।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - मन की शांति कैसे प्राप्त करें?

भगवान - निरमना अवस्था से ही शांति संभव है। क्योंकि जब तक मन है तब तक मन का दमन हो सकता है शांति नहीं। महावीर ने कहा है असुत्ता सो मुनि। और जो मुनि है वही तो शांत है। लेकिन ये लक्षण वास्तविक मुनि के है। आज का तथाकथित मुनि स्वयं अपना आंकलन करें।

योद्धाः - अंधविश्वास क्या है?

भगवान - बिना तर्क के किसी के भी कहने को सत्य मान लेना। जैसे तुम धार्मिक किताबों की बातों को सत्य मान लेते हो। बिना अपने बोध द्वारा विचार किए। पूरा भारत किसी न किसी मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरूद्वारे में जाता है सभी को स्वर्ग जाना है। इतना सुंदर जीवन किसी को भी समझ नहीं आ रहा है। बस इसी मूढ़ता भरी सोच का नाम अन्धविश्वास है।

योद्धाः - क्या भगवान को मानना चाहिए?

भगवान - **नहीं!** स्वयं को ही मानना चाहिए। भगवान को जीना है, भगवान को खाना है, भगवान को ओढ़ना है। मानने से कुछ नहीं होगा केवल तुम आँखों के अंधे ही बनोगे। भगवान यानी तुम्हारा जीवन! और कुछ भी तो नहीं।

योद्धाः - संसार मात्रा से प्रेम कैसे करें?

भगवान - प्रेम घर बैठे किया जा सकता है। प्रेम के लिए किसी दूसरे के होने की आवश्यक्ता ही नहीं होती। हाँ! द्वेष के लिए, हिंसा के लिए, दूसरे को दुख देने के लिए दूसरे का होना आवश्यक है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - हम अपने धर्मों में कैसा संशोधन करे कि ये भी तुम्हारी सोच की तरह मुक्ति प्रदान करे?

भगवान - जेल को कितना भी सुंदर बना लो घर नहीं बना सकते। मुक्ति घेरो में नहीं घेरो से बाहर रहकर ही मिलती है। सारे बंधन तोड़ तो और अपनी मुक्ति की घोषणा कर दो। कोई भी सोच तुम्हे बांध नहीं सकती। ये बंधन तुम्हे किसी और ने नहीं बांधे है तुम्ही ने इन बेड़ियों को सुन्दर सुन्दर नाम दिए है। तोड़ दो सारी जंजीरों को और मुक्त हो जाओ।

योद्धाः - इतने लोग मंदिर मस्जिद जाते है क्या वो सही नहीं करते?

भगवान - उत्तर बहुत आसान है स्वयं से पूछो कि तुम मंदिर क्यों जाते हो। **"मस्जिद बहुत करीब थी मयखाना दूर था"।** समाज क्या कहेगा? बच्चों की शादी न रुक जाए क्योंकि लोग कहेंगे कि ये व्यक्ति मंदिर नहीं जाता, अगर भगवान हुआ तो क्या होगा? मंदिर जाना ही नहीं होता। मंदिर तो पूरा जहां है। उस परमात्मा के बनाये मंदिर से भाग कर जाओगे भी तो कहां?

योद्धाः - गीता और कुरान के सूक्त पढ़ने से क्या लाभ?

भगवान - उधार बुद्धिमानी काम नहीं आती। जीवन के अनुभव से जो मिले वही ज्ञान काम आता है। गीता बुद्ध के समय भी थी तो क्या गौतम को बुद्धत्व उपलब्ध करा पायी? कुरान तब उतरी जब मोहम्मद खुदा से प्रेम कर बैठे। कुरान के कारण प्रेम नहीं उपजा, प्रेम उपजने के बाद कुरान उतरी। शास्त्र है क्या? दीवानों की प्रेम गाथा। और तीर्थ है क्या? मस्तानों का निवास। जहां जहां प्रेम करने वाले रुके वहीं-वहीं तीर्थ बना। अगर तुम्हारें मन में भी प्रेम है तो तुम चलते-फिरते तीर्थ हों।

योद्धाः - क्या मरने के बाद ही परमात्मा प्राप्ति होती है?

parmatmang
the ultimate wisdom

भगवान - परमात्मा या खुदा को फेंक दो! जीवन को देखो। **"वहाँ कौन है तेरा - मुसाफिर जाएगा कहाँ। दम ले ले घर पे - ये जहाँ पायेगा कहां"।**

योद्धाः - जीवन यानी खुदा, यानी परमात्मा! उसके लिए पूरा संसार क्या है?

भगवान - आकाश के लिए ना कोई सूरज है ना धरती। उसके लिए तो रेत के कण बिखरे है। उसी प्रकार तुम प्रकट होते हो या अप्रकट कुछ भी अंतर नहीं पड़ता उसमे। सागर में बुलबुले उठे या मिटे? तुम क्या सोचते हो सागर उसके विषय में कुछ भी सोचता है?

योद्धाः - क्या आत्मा का पुर्नजन्म होता है?

भगवान - आत्मा का जन्म ही नहीं होता तो पुर्नजन्म कैसा? शरीर आता जाता है आत्मा अखंड रूप से बिखरी पड़ी है वो कंही आती जाती नहीं। लेकिन कच्चे घट कुछ नहीं समझ पाएंगे? उनके लिए तो जो किताबों में लिखा है वो ही ठीक है।

योद्धाः - जीवन और परम जीवन में क्या भेद है?

भगवान - चेतना के एक तल से दूसरे तल में जाना और कुछ भी नहीं। दोनों तुम्हारे ही चेतना के तल है लेकिन दोनों में जमीन और आसमान का अंतर है।

योद्धाः - परमात्मा के भजन का क्या तात्पर्य है?

भगवान - भजन यानि हमेशा उसका चिन्तन। किसका? परमात्मा का। परमात्मा कौन? तुम्हारा जीवन। यानि आज में रहना और आज में सुखी होना। न कि किसी देवता आदि की माला करना।

योद्धाः - सनातन धर्म का क्या अर्थ है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - गूगल करो! सनातन का अर्थ होता है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। लेकिन जैसे निक्कम्मा नेता जो देश का हित करने में असमर्थ होता है वो अपने से पहले जन्मे सभी महापुरुषों से अपना नाम जोड़कर जनता को गुमराह कर भ्रमित करता रहता है उसी प्रकार पाखण्ड फैलाने वाले लोग ऐसे ही किसी भी शब्द को अपने से जोड़कर अपने पाखण्ड को सदियों पुराने होने के सबूत देने लगते है। सनातन धर्म नामक कोई धर्म नहीं होता। हाँ! धर्म जरूर सनातन होता है। धर्म यानी प्रेम, दया, करुणा, आदि ये सनातन है। लाखों वर्ष पहले से पशु पक्षी अपने बच्चों से प्रेम करते है, बाघ जैसा हिंसक जानवर भी गर्भवती हिरणी को छोड़ देता है। हाँ! ये गुण इंसानों के लिए नहीं है। और इंसानो को इसकी आवश्यकता भी नहीं है। क्योंकि हम धार्मिक है?

योद्धाः - क्या मृत्यु के बाद आत्मा का कुछ होता है?

भगवान - मृत्यु से पहले ही आत्मा का कुछ नहीं होता तो बाद में क्या होगा। तुम सोचते हो कि तुम स्वास नहीं लोगे तो वायु का क्या होगा? तुम्हारे पैदा होने से पहले भी वायु थी और बाद में भी रहेगी। तुमसे पहले भी आत्मा कण कण में विद्यमान थी और बाद में भी रहेगी। **"बैलगाड़ी के नीचे चलने वाले कुत्ते की कहानी सुनी है तुमने"? एक हाथी के ऊपर एक चिड़िया बैठी थी तो उसे भ्रम हो गया कि मेरे चलने से धूल उड़ रही है।** बस वही स्थिति हो रही है तुम्हारी।

योद्धाः - क्या सभी धर्म एक समान है?

भगवान - अगर धर्म से तुम्हारा मतलब तथाकथित 365 प्रकार के धर्मों से है तो ये एक ही समान है। क्योंकि इन सभी धर्मों में पाप मुक्ति के उपाय विद्यमान है। सभी कहते है कि दान और पुण्य से पापों की सजा से बचा जा सकता है। सभी के धर्म गुरु एक समान धर्म की दुकान सजाए बैठ जाते है। सभी धर्म एक समान मृत वस्तुओं की पूजा करने को ही धर्म मानते है। जैसे कोई खड़े पत्थर की पूजा करता है तो कोई अनगढ़ पत्थर को चूमता है, कोई कागज को तो कोई लकड़ी के क्रास पूजने को ही धर्म मानता है। सभी धर्मों में उनका ईश्वर कोई दूसरा व्यक्ति होता है जो कहीं दूर किसी और ही ग्रह पर रहता है। सभी धर्म मूर्खता वश अपनी अपनी सुविधा अनुसार अपने लिए स्वर्ग में सुख सुविधाओं की कल्पना कर लेते है तथा अपने ही धर्म को न मानने वालो के लिए कठोर से कठोर नरक की यातनाओं की कल्पना कर लेते है। **"हाँ! जिसे मैं धर्म कहता हूँ वो तो तुम्हारा सत्य है"।**

योद्धाः - क्या अंत समय में लिया गया परमात्मा का नाम कुछ लाभ करता है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - तुम्हारी मूर्खता को ही दर्शाता है। कि तुम आज भी मरने के बाद स्वर्ग की चाह के ही स्वप्न देख रहे हो। इससे सिद्ध होता है कि तुम्हारा पूरा जीवन नर्क में ही बीता। मैं तुम्हे यहाँ सुखी करने की बात कर रहा हूँ और तुम अब भी मूर्खता भरे स्वपन देख रहे हो।

योद्धाः - गुरु पूजा का क्या अर्थ है?

भगवान - अस्तित्व मात्र के प्रति प्रेम भाव, करुणा भाव। क्योंकि पूरा अस्तित्व ही तो गुरु है।

योद्धाः - क्या प्रेम ही अंतिम सत्य है?

भगवान - हाँ! प्रेम ही हर मार्ग की पूर्णता है, तुम किसी देश के राजा हो तो भी राज काज तभी धार्मिक होगा जब राजा प्रजा से प्रेम करे, अगर तुम पति पत्नी हो तो परिवार तभी सार्थक होगा जब प्रेम होगा, अगर तुम धर्म की बात करते हो तो तभी तुम वास्तव में धार्मिक होगे जब तुम संसार मात्र से प्रेम करोगे। तुम किसी भी कार्य में हो बिना प्रेम के तुम उस कार्य में सही दिशा ना ला पाओगे। कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर आदि महापुरुषों ने प्रेम के कारण ही पूर्णता को पाया। और तुम आज सभी मूर्खता वश अपने अपने धर्मों के मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे से ही प्रेम करने को धर्म मानने लग गए। क्या उत्तम विचार है तुम धर्मिको के, जिन्दा से प्रेम को दुत्कार कर मृत से प्रेम? जीवन को तुच्छ मानकर स्वर्ग से मोह?

योद्धाः - जब इस जीवन को छोड़ना ही है तो यहां जीवन में संघर्ष क्यों करना?

भगवान - यही कमी है तुम्हारे उलटे धर्मों में। वो हमेशा से ही जीवन से भागने की ही शिक्षा देते आ रहे है। जीवन से भागना नहीं है जीवन में जागना है। मरने के बाद कहीं स्वर्ग नहीं है उठो और इसी जीवन को स्वर्ग बना लो। और जो लोग बोलते है कि ये संसार सराय है यहाँ कुछ भी करना उचित नहीं है! उनका मत है कि बच्चा पैदा हुआ आखिर तो वो एक दिन

parmatmana
the ultimate wisdom

मरेगा ही। चलो पैदा होते ही उसे श्मशान ले जाकर जला दो। जब एक दिन जाना ही है तो व्यर्थ ही 80 वर्ष का झंझट क्यों करना। बाकि तुम समझदार हों स्वयं की बुद्धि से निर्णय करों।

योद्धाः - क्या जो मृत्यु के बाद धर्म गुरु कहता है कि मौन रखकर प्रार्थना करो! हे ईश्वर उनकी आत्मा को शांति देना और अपने चरणों में निवास देना। क्या ये वाक्य ठीक है?

भगवान - पूर्णतया गलत। अब तुम्हारे धर्म गुरु को कुछ भी पता नहीं है तो वो कुछ तो बोलेगा ही। जो उसने आज तक सुना है वो ही तो बोलेगा। अपना तो अनुभव जीरो है। मैं तो तुम्हे अपना अनुभव बता रहा हूँ। तुम भी इस सत्य के मार्ग पर कुछ कदम मेरे साथ चलोगे तो ही मेरी बातें समझ आएँगी। अब बताओ जो मर गया उसके बाप की आत्मा थी क्या? जब वो पैदा हुआ तो पहले से ही आत्मा अस्तित्व में विद्यमान थी और जब वो मरा तो वो आत्मा पुनः अस्तित्व में समा गयी। तो आत्मा जो अस्तित्व में थी वो तुम्हारे पैदा होने से अशांत कैसे हुई? क्या बादलों के आने-जाने से आसमान मैला हो जाता है? और अपने चरणों में निवास देना, तो जो परमात्मा कण-कण में है उसके चरण कंहा है? कुछ पता भी है तुम्हे? क्या पृथ्वी के ऊपर आकाश है? अगर स्पेस स्टेशन से देखोगे तो पाओगे कि अनंत आकाश के भीतर पृथ्वी है एक छोटे से रेत के कण के बराबर।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - तुम्हारे कहे अनुसार अगर हम ये माने ही ले कि यह दुनिया सुख है तो हमें वो सुख कैसे मिलेगा?

भगवान - अपने अपने धर्म स्थलों पर माथा फोड़ने की जगह अगर तुम सभी इस संसार को सुन्दर बनाने की और ध्यान देते तो आज यही संसार स्वर्ग बन जाता। फिर न तो ये जीवन नर्क होता और न ही तुम्हें मरने के बाद स्वर्ग की चाह होती। अभी भी समय है अगर चाहों तो आज ही अपना स्वर्ग निर्मित कर लों।

योद्धाः - मृत्यु के क्षण में कौन सा नाम मुख में आना चाहिए?

भगवान - इस प्रकार जीवन जियो कि मृत्यु के क्षण में यह कह सको कि **"मजा आ गया जीवन जीने का। हो सके तो ये जीवन हमें पुनः पुनः देना मैं इसे बार बार जीना चाहूंगा"।** इतनी सुंदरता से जीवन जियो कि मृत्यु की आंखों में आंखें डाल कर कह सको कि देख तू रोज आई और मैंने तुझे 90 वर्ष छकाया। तुझे 90 वर्ष रोज हराया। जा एक दिन तुझे जितने देता हूँ।

योद्धाः - क्या भगवान हृदय में रहते है?

भगवान - ये तुमने किसी पुस्तक में पढ़ लिया होगा। अगर तुम हार्ट को ही हृदय मानते हो तो देखो क्या भगवान हाथ या पैर में नहीं रहते? ये तो जिसे अनुभव हो गया उस बुद्ध पुरुष का वर्णन है। केवल शब्दों से इस प्रश्न का उत्तर तुम्हे दे भी दिया जाए तो समझ नहीं आएगा।

योद्धाः - क्या धर्म जीवन के अंत में करना चाहिए?

भगवान - धर्म जीवन को स्वर्ग बनाता है जीते जी। और तुम इसे अंत पर टालना चाहते हो यानी जीवन को नर्क बनाए रखना चाहते हो?

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - मंदिर और मस्जिद में झगड़े क्यों है?

भगवान - मंदिर-मस्जिद, हिन्दू-मुस्लिम धर्म नहीं सम्प्रदाय है। धर्म दो होते ही नहीं। और जंहा दो है ही नहीं वहां झगड़ा कैसा। धर्म इन से कोसो दूर है। उसका कुछ भी नाम नहीं है बस तुम उसका अनुभव कर सकते हो। द्वैत ही झगड़े की जड़ है।

योद्धाः - बुद्धों की भाषा समझ क्यों नहीं आती?

भगवान - जो समझ आ जाये वो बुद्धों की नहीं तुम्हारी ही भाषा होगी। तुम्हे उन्ही बातों से लाभ है जो कुछ तो तुम्हे समझ आये और कुछ तुम्हारे ऊपर से निकल जाये। अगर सत्य तुम्हे पूरा पूरा समझ आ जाये तो वो सत्य नहीं होगा। वो झूठ होगा।

योद्धाः - क्या मंदिर मस्जिद समाज परिवर्तन में कुछ भी नहीं कर सकते?

भगवान - अगर कर सकते तो करोड़ो-मंदिर मस्जिद है दुनिया में। सुबह शाम करोड़ो लोग आरती प्रार्थनाएं करते है। लेकिन उन प्रार्थनाओं से भगवान, अल्लाह, खुदा के चिन्हों की छाया कुछ बनी है समाज में?

योद्धाः - तीर्थ कौन सा सही है?

भगवान - जहां तुम्हारा हृदय जागृत और द्रवित हो जाए। तीर्थ मंदिर मस्जिद से नहीं बनते। तुम्हारे सजदे से बनते है। मोहम्मद के सजदे के कारण काबा तीर्थ हो गया।

योद्धाः - क्या शूद्र से भेदभाव गलत है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - कितने शर्म की बात है हमारे देश के लिए कि हम जानवर को घर मे अपने साथ सुला लेते है लेकिन एक शूद्र या दूसरे धर्म के व्यक्ति के घर खाने से धर्म भ्रष्ट होने का खतरा मान लेते है। हमारे देश के धार्मिकों से तो पशु पक्षी अच्छे है। सारे पक्षी अपने जैसे पक्षियों के साथ घुल मिल कर रहते है। और हम धार्मिक लोग तो! भगवान भी ब्राह्मणों का अलग और शूद्रों का अलग बनाए बैठे है।

योद्धाः - क्या प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है?

भगवान - **एक अर्थ से तो हाँ!** क्योंकि जब बाहर सभी जगह ढूंढ लोगे तो मेरी बात मानने के अलावा कोई और रास्ता ही नहीं बचेगा। लेकिन वो मिलेगा नहीं तुम्हें प्राचीन ग्रंथों से। मिलेगा

तो भीतर से ही। **"कोई मंदिर, मस्जिद तुम्हे उसका दीदार नहीं करवा सकता। ना काबा न काशी"।** भटको खूब भटको। आखिर जिस दिन थक कर, हार कर बैठ जाओगे और मन से मर जाओगे उस दिन उस खुदा को सामने ही खड़ा पाओगे। और देखोगे कि **वो कब से बाहें फैला कर खड़ा था। तुम ही अपने होश में नहीं थे।**

योद्धाः - क्या एक का अनुभव संभव है?

भगवान - **हाँ!** तुम्हारा होना ही बाधा है। तुम्ही दो माने फिर रहे हो। एक ईश्वर के अलावा यहाँ दूजा है ही नहीं। और कमी ये है कि तुम्हे मरना ही नहीं आ रहा है। क्योकि तुम्हारे सभी के धर्म तुम्हे धर्म में कुछ बनना सीखा रहे है और धर्म मरने की कला है। **"मेरे पास आओ मैं तुम्हे पूर्णतया मार दूंगा, तुम्हारा सिर ही नहीं रहने दूंगा। फिर जब तुम बिना सिर के घूमोंगे तभी तुम धार्मिक कहलाओगे"।**

योद्धाः - क्या मरने के बाद भवसागर को पार करना होता है?

भगवान - तुम्हारे इसी जीवन का नाम तो भव सागर है। और इसे ही हंसी खुशी जीना होता है। और जिन्होंने तुम्हे ये समझाया है कि मरने के बाद कोई भव सागर है वो अभी भी बालक बुद्धि है। उन्होंने धर्म को केवल मरी हुई किताबे पढ़कर ही रटा है। उन्हें जीवन का कुछ भी अनुभव नहीं है।

योद्धाः - क्या अकाल मृत्यु के बाद प्रेत योनि मिलती है?

भगवान - एक करोड़ 19 लाख व्यक्ति एक्सीडेंट में, 7 लाख 20 हजार आत्महत्या करके तथा 6 करोड़ लोग अपनी ही मौत प्रतिवर्ष मरते है। लेकिन इनकी वासनाएँ भी तो बची हुई होगीं। अब इतने प्रेत बनते है तुम्हारे रूढ़िवादी, अंधविश्वासी, मूर्खता भरे धर्मो की सोच के कारण।

parmatmana
the ultimate wisdom

अब बताओ तुम इन प्रेतों के बीच में कैसे रहोगे? **अच्छा तो होगा तुम भी प्रेत बन जाओ। तभी अच्छी निभेगी।**

योद्धाः - आत्मा और शरीर का सम्बंध क्या है?

भगवान - जो सम्बंध पृथ्वी और आकाश का है, जो सम्बंध सागर और लहरों का है, जो सम्बंध बल्ब और लाइट का है, जो सम्बंध नृतक और नृत्य का है, जो सम्बंध भूख और भोजन का है, जो सम्बंध ज्ञान और समझ का है, जो सम्बंध दीपक और प्रकाश का है, जो सम्बंध प्रेम और प्रेमी की रक्षा का है।

योद्धाः - क्या जीवन में संघर्ष आध्यात्मिक विकास का हिस्सा है?

भगवान - **हाँ!** अगर गौतम 6 वर्ष ना भटकते तो बुद्ध ना बनते। तुम भी भटको, मरो, मिटो, और जब तक पूरे पूरे ही न मर जाओ रुकना मत। तुम भी उस पूर्णता को पा जाओगे जिस पूर्णता को कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर आदि महापुरुषों ने पाया।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - कौन सा मार्ग मुक्त करता है?

भगवान - सत्य मुक्तिदायी है और तुम्हारे धर्म बन्धनदायी। अगर मुक्त होना है तो स्वयं का सत्य खोजो। किसी दूसरे का सत्य तुम्हे मुक्त न कर पायेगा।

योद्धाः - क्या लोगों को मंदिर-मस्जिद नही जाना चाहिए?

भगवान -मंदिर-मस्जिद जाना चाहिए लेकिन ईट-पत्थर के मंदिर-मस्जिद नही। उस मंदिर-मस्जिद जाना चाहिए जिस मंदिर-मस्जिद को खुदा ने, ईश्वर ने रचा है। और जिन मंदिर-मस्जिद रुपी दुकानों को भिखमंगों ने बनाया है वहां जाकर तुम्हें कोई भी लाभ न होगा। उल्टा तुम अंधविश्वासी और पाखंडी ही बनोगे।

योद्धाः - क्या हम मूल से जुड़ें हुए है?

भगवान - **हाँ!** टूटने का कोई उपाय ही नहीं है। एक ही उर्जा पूरे ब्रह्माण्ड़ में विद्यमान है। मुझमें और तुम में, सभी में। हमारे मिटते ही वो पुनः मूल ऊर्जा में मिल जाती है। तभी तो जो लोग जीते जी अपने विचारों को शांत कर मस्तिष्क की सूक्ष्म तरंगों में पहुँच पाते है वो वहां से उस मूल ऊर्जा के सोत्र से एक होकर विज्ञान की सभी पहेलियों के हल पा लेते है। जैसा कि हमारे देश में कई बुद्ध पुरुषों ने पूर्व में किया है। लेकिन यह एक विज्ञान है इसमें किसी भी देवी-देवता का हाथ नही है।

योद्धाः - आखिर धर्म क्या है? और परमात्मा कौन है?

भगवान - जीवन, भगवान, परमात्मा, खुदा, अल्लाह, सत्य! यह सभी एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न नाम है। यह सभी शब्द तुम्हारे यानी मनुष्य के ही पर्यायवाची है। लेकिन जागते हुए मनुष्य के। और सोये हुए मनुष्य के नाम है तुम्हारें तथाकथित 365 प्रकार के धर्म।

योद्धाः - कहते है कि आत्मा के पीछे ही उसके पाप और पुण्य चलते है जो उसे अगले जन्म, में सुख या दुःख देते है? क्या ये सही है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - तुम्हारे शास्त्रों ने अपना ही आत्मा का सिद्धांत खंडित कर दिया। मानो बादल को अग्नि जला नहीं सकती, जल डूबा नहीं सकता, शस्त्र काट नहीं सकता तो उन्हीं बादलों से तुम कुछ भी बांध कैसे सकते हो? तुम्हे क्या लगता है जब बादल नहीं होते तो वो क्या कहीं हैंगर में चले जाते है? नहीं! बादल हमेशा से ही होते है कहीं प्रकट और कहीं अप्रकट। आत्मा से कुछ नहीं बंधता। **जिन्होंने शास्त्र लिखे उन्होंने बुद्धि का प्रयोग किया। आत्म ज्ञान बुद्धि से पार का विषय है।**

योद्धाः - क्या मरने के बाद हम स्वर्ग में पैदा होते है?

भगवान - आज से हजारो वर्ष पहले इजिप्ट में राजा लोग अपनी मम्मी बनवाते थे कि जब कभी मनुष्य को जिन्दा करने की विधि हाथ लगेगी तो हमें भी जिन्दा कर लिया जायेगा। आज तुम क्या मानते हो वो ठीक कृत्य था या कोरी मूर्खता थी।

योद्धाः - पुजारी के द्वारा पूजा करवाने से क्या हानि है?

भगवान - जो पुजारी 15000 की तनख्वाह पाकर तुम्हारे भगवान के गुणगान करता है वो किसी और से दोगुनी तनख्वाह पाकर तुम्हारे भगवान के विपक्ष में भी बोल सकता है। **पूरे भारत में पैसे के लालच में आकर आखिर पंडितों ने एक नई मूर्ति के चरित्रों का गान किया ही ना।** कुछ कार्य स्वयं ही करने होते है उन कार्यो को तुम दूसरे से करवा कर स्वयं को ही धोखा देते हो।

योद्धाः - क्या भगवान है, क्या खुदा है?

भगवान - **हाँ!** मेरे को देख लो। मैं पूरा पूरा हूँ। और पागल मत बनो तुम भी पूरे-पूरे हो। बस अंतर इतना है कि तुम्हें पता नहीं है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या सभी धर्म एक ही सत्य की ओर जाते हैं?

भगवान - **हाँ!** लेकिन वो सत्य तुम्हारा निज का होता है वो सत्य हिन्दू या मुस्लमान की पुस्तकों जैसा नहीं होता। और जिस दिन तुम्हे वो सत्य मिलता है तुम्हारी सारी पुरानी धारणाएं उल्टी दिखाई देती है।

योद्धाः - सनातन शब्द कहां से आया?

भगवान - **सनातन की गंगोत्री बुद्ध है। एस धम्मों संनतनो!**

योद्धाः - पाठ पूजा तीर्थ से लाभ नहीं होता तो हानि ही क्या है?

भगवान - एक बार कुंभ के मेले में दम घुटने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। डाक्टर आए चेक किया बोले अब कोई उपाय नहीं है ये मर चुका है। तभी वहा खड़े एक पोंगा पंडित ने कहा छाती पर तेल मालिश करो और हाथो से दबाओ। डाक्टर ने कहा कोई लाभ नहीं होगा ये मर ही चुका है। तब वो पंडित बोला लाभ नहीं होगा तो हानि भी क्या होगी तुम करो बस।

योद्धाः - कौन सा तीर्थ उत्तम है?

भगवान - क्यों पागलों की तरह भटक रहे हों। तुम्हारे ही चरणों में सारे तीर्थ है। अपना जीवन देखों और उसी का आदर करों।

योद्धाः - क्या दुनिया भर में फैले 365 प्रकार के धर्म सही नहीं है?

भगवान - ईट-पत्थर के मन्दिर-मस्जिद के लिए लड़ मरते हो तुम सभी। और स्वयं को धार्मिक कहते हो?

योद्धाः - क्या आध्यात्मिकता का कोई अंत होता है?

भगवान - आध्यात्मिकता एक निरंतर यात्रा है, जो जीवन भर चलती रहती है। और चलना ही पवित्रता बनाये रखता है। तुम्हारे धर्मों में सड़ान क्यों आ गयी क्योंकि सदिया हो गयी उन्हें ठहरे। तुम भी कंही ठहरोगे तो सड़ोगे। मेरे पास भी मत ढहरना। **"तू जाग जा तू भाग जा"।**

योद्धाः - तुम्हारी यह पुस्तक कितनी बार पढ़े की समझ आ जाए? ज्ञान हो जाए और घटना घट जाए? खुदा का, परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - अगर मेरी पुस्तक की एक भी पंक्ति तुम्हे समझ आ जाये तो कुछ और पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं है। क्योकि मैंने पूरी पुस्तक में एक ही सूक्त लिखा है। हजारो सूक्त पढ़कर करोगे भी क्या? ज्यादा सूक्त पढ़कर तो यही पता चलता है कि तुमने पहले के सूक्त नहीं समझें। शायद अब तक तुम समझ गए होगे और नहीं समझे तो हनुमान चालीसा का पाठ करो और नमाज अदा करों क्योंकि ये प्रश्न और उत्तर मूर्खतापूर्ण है। ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न से बचे रहोगे तो सुखी रहोगे वरना जीना दूभर हो जायेगा। मरना आसान दिखेगा। **इसीलिए मैंने कई बार कहा है कि मुझसे दूरी बनाए रखो क्योंकि मुझे सुनोगे तो मौत निश्चित है। फिर भी मरने को इतना उतावले हो तो चलो साथ में मृत्यु को छेड़ते है।**

योद्धाः - क्या गंगा स्नान से पुण्य मिलता है?

भगवान - **नहीं!** केवल तुम्हारी मूढ़ता ज्यादा दृढ़ हो जाती है क्योंकि पाप तो तुम मन से करते हो और गंगा में धो आते हो शरीर को।

योद्धाः - भारत गरीब और पिछड़ा हुआ क्यों है?

भगवान - केवल तुम्हारे कारण। जब तक तुम अकेले इन धर्म रुपी मूर्खता भरी सोच को नहीं छोडोगें तब तक भारत गरीब और पिछड़ा ही रहेगा। और केवल तुम्हारें कारण इसलिए लिखा कि तुम केवल इस मूर्खता भरे मार्ग को छोड़ों और ऐसे ही जब 145 करोड़ लोग अकेले ही इस मूर्खता भरी सोच को छोडेगें तो यह देश शायद उपर उठ सकेगा।

योद्धाः - क्या शास्त्रों में जो वर्णन है कि चार युग है और यह कलयुग चल रहा है वो सत्य हैं?

भगवान - इसी प्रकार की मूर्खता के कारण ही यह देश आज तक गरीब और पिछड़ा हुआ है। जिन लोगों को अपना पेट भरने के लिए कमाने का ज्ञान नहीं है वह सभी किसी न किसी

धर्म का चोला ओढ़कर जनता को मूर्ख बनाने लग जाते है। कोई चार युग नहीं होते। तुम अगर अच्छा सोचते हो और समाज में अच्छा व्यवहार करते हो तो तुम आज भी सतयुग में हों। और अगले ही दिन अगर तुम हिंसा, डकैती, खून- खराबा, बलात्कार करने की सोचते हो तो तुम कलयुग में हों।

योद्धाः - परमात्मा ईश्वर की जो प्राण प्रतिष्ठा की जाती है उसका क्या महत्व है?

भगवान - यह कृत्य केवल अहंकार के कारण ही होता है वरना मनुष्य एक पत्ते को भी स्वयं पैदा नहीं कर सकता। लेकिन दंभ भरता है परमात्मा में प्राण फूंकने का। कोरी-कोरी मूर्खता है।

योद्धाः - क्या हमारी संस्कृति ठीक नहीं है?

भगवान - यह निर्भर करता है कि हम संस्कृति कह किसे रहे है। क्या मंदिर-मस्जिद जाने को? या अपने माता-पिता या बुजुर्ग आदि से अच्छा व्यवहार करने को? **संस्कृति के नाम पर हमने कचरा ही लादा है कुछ ने हिन्दू होने की संस्कृति लाद ली है कुछ ने मुस्लिम होने की।** और किसी ने भी यह नही देखा कि इस सड़ी-गली संस्कृति ने आज तक उन्हें दुःख के अलावा दिया क्या है। संस्कृति उसे मानना चाहिए जो तुम्हे आज सुखी करें।

योद्धाः - जब इस दुनिया में सनातन धर्म नही था तब दुनिया में कौन सा धर्म था?

भगवान - तुम्हें क्या लगता है बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, मोहम्मद, जीजस आदि महापुरुष सनातन धर्म को रटकर जागृत हुए थे? **सनातन धर्म नामक कोई धर्म होता ही नहीं।** हाँ! धर्म जरूर सनातन होता है। यानी धर्म जरूर स्थिर होता है। और वो स्थिरता है प्रेम, करुणा, दया आदि गुण। **सोचो अगर हमारी ही दुनिया में मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे नही**

होते, गीता, कुरान, बाईबिल, ग्रन्थ, धम्मपद आदि नही होते तो क्या दुनिया आज से बेहतर होती या आज की दुनिया बेहतर है? सोचों और अपनी ही मूर्खताओं पर हसों।

योद्धाः - तप का क्या तात्पर्य है?

भगवान - जीवन में आई रोज-रोज नई-नई चुनोतियों में भी कृष्ण की भांति हसते मुस्कुरातें रहना ही तप है। और मूढ़ों की तरह तन आदि को सताना मूढ़ता है।

योद्धाः - आज कौन सा महात्मा सही है?

भगवान - बड़े शर्म की बात है जिस देश में बुद्ध, महावीर, कृष्ण, नानक, कबीर जैसे महापुरुष जन्मे! जिनका मुकाबला पूरी दुनिया में नहीं है। **वो देश आज अनपढ़ राजनेताओं के, पाखंडी धर्म गुरुओं के हाथ की कठपुतली बना हुआ है।** कौन सा महात्मा ठीक इससे कुछ भी लाभ होने वाला नहीं। स्वयं से ये पूछो कि क्या मैं ठीक हूँ?

योद्धाः - इस देश से बुद्ध के भिक्षुओं को जिंदा जला दिया गया ऐसा क्यों?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - यह शायद मेरे साथ भी हो। यहाँ अनपढ़, गवार की संख्या इतनी ज्यादा है कि जब कोई एक बुद्ध लोगों को जगाने की कोशिश करता है तो वो सभी मिलकर उसे ही सुलाने की साजिश कर लेते है। **अंधो के देश में आंख वाले को पसंद नहीं किया जाता।**

योद्धाः - कहीं ऐसा तो नहीं की तुम्हारी बातें माने और अपने हिन्दू या मुसलमान होने से भी हाथ धोना पड़े?

भगवान - हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन तो छोड़ो तुम्हे स्वयं से भी हाथ धोना पड़ेगा। लेकिन फिक्र मत करो, यही होता है नदी के साथ भी। नदी जब सागर से मिलती है तो नदी तो नहीं बचती लेकिन सागर जरूर बन जाती है। बस यही होगा तुम्हारे साथ भी। तुम

हिन्दू मुस्लिम तो नहीं बचोगे लेकिन खुदा जरूर हो जाओगे। मेरे साथ कुछ कदम चल कर तो देखो तुम्हें पूरा पूरा खुदा बना दूंगा। **"मैं को खोकर ही तू को पाया जाता है। खुद को मारों और अपने खुदा को पैदा करों। यही सनातन सत्य है और यही सनातन धर्म है"।**

योद्धाः - संसार में कभी कभार देखने को आता है कि लोग लाशों को भी साईकिल, रिक्शा, या गोद में उठाकर ले जाने को मजबूर होते है? ऐसा क्यों?

भगवान - यह भारत का दुर्भाग्य है कि यहां लोग मनुष्यों से ज्यादा धर्म को महत्व देते है उन्हें जिन्दा मनुष्यों से ज्यादा मरी हुई पत्थरों की मूर्तियों की सेवा करना ज्यादा उत्तम लगता है। कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर के देश में ऐसा होगा शायद उन्होनें कभी कल्पना भी न की होगी।

योद्धाः - क्या मंदिरों में सोने चांदी के आभूषण चढ़ाना गलत है?

भगवान - हाँ! क्योंकि जिस देश में लोग अपने परिजनों के शवों को भी पैसे के अभाव के कारण एंबुलेंस में ले जाने में असमर्थ हो और वहां पत्थरों की मूर्तियों के लिए सोने चांदी के आभूषण बनाए जाते हो यह कोरी मूर्खता नही तो और क्या है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - ध्यान और साधना का क्या महत्व है और यह कैसे काम करता है?

भगवान - ध्यान का जो तात्पर्य तुम सभी ने आंखें बंद कर मौन होने से मान लिया है वह त्रुटिपूर्ण है। ध्यान का मतलब बाहर की आंखें बंद कर मौन नही रहना है बल्कि बुद्धि से मौन होना है। यानी निर्विचार होना है। और निर्विचार होना ध्यान है और उस निर्विचार होने की विधि का नाम साधना है। और इस प्रकार की साधना से ही मनुष्य द्रष्टा भाव को उपलब्ध होता है।

योद्धाः - अपराध बोध से पीछा कैसे छूटे?

भगवान - गम को भुला दो, रक्स करो!

योद्धाः - ब्राह्मण कैसे हुआ जाता है?

भगवान - **मैं को मारो अगर तू को पैदा करना है।** ब्राह्मण बनने के लिए मैं रुपी अहंकार को मारना होता है। यह सूक्त शास्त्रों में दिया गया है। नेति-नेति का सिद्धान्त तुम सभी ने पढ़ा होगा। यानी ये नही ये नही। लेकिन अज्ञानता वश लोगों ने इसका अर्थ हाथ-पैर, सिर और शरीर से ले लिया है। नहीं! इसका सही अर्थ है **मैं ब्राह्मण-शूद्र आदि जाति नहीं, मैं पुण्यात्मा-पापात्मा नहीं, मैं ऊंच-नीच नहीं, मैं हिन्दू-मुसलमान नहीं।** यानी मैं कुछ भी नहीं। फिर जो बचता है वही ब्रह्म है और वह ब्रह्म ही तो ब्राह्मण है।

योद्धाः - ब्राह्मणों का जाल कैसा है?

भगवान - ब्राह्मणों के जाल से हिन्दू ब्राह्मण से तात्पर्य नहीं है ब्राह्मणों के जाल का तात्पर्य है उन लोगो से जो दूसरो को अपनी सोच के अनुसार चलाकर अपना उल्लू सीधा कर स्वयं को पूजवाना चाहते है और ऐसे लोग हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या दुनिया भर में फैले सभी 365 प्रकार के धर्मों में पाए जाते है और ऐसे ही ज्यादातर राजनेता होते है। तो जाल का मतलब है कि वो विचारधारा जो यह कहती है कि तुम कुछ मत सोचो जैसा मैं समझाऊं वैसा ही करो यह सोच रखने वाले लोगों के जाल का नाम है ब्राह्मणों का जाल। इसको केवल हिन्दू धर्म से जोड़ना नाइंसाफी होगा।

योद्धाः - क्या धन का भोग गलत है? कहते है रावण ने धन का भोग किया वो भी नहीं बचा?

भगवान - तो तुम पहले उसे खोज लो जिसने धन का उपयोग न किया हो और वो अभी तक जिंदा हो।

parmatmaa
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या सभी पुराने मंदिरों में बुद्ध की ही प्रतिमाएं है?

भगवान - कुछ फर्क नहीं पड़ता कि तुम बुद्ध की प्रतिमा के आगे सर नवाओं या किसी और की प्रतिमा के आगें। तुम तो तुम ही रहोगें न। बुद्ध तो बिना किसी प्रतिमा के आगे सर नवाएं बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए। तुम्हारें जागने से क्रांति घटेगी।

योद्धाः - शास्त्र से सत्य क्यों नहीं मिलता?

भगवान - शास्त्र पढ़ोगें तो तुम ही न। तो तुम जिस अवस्था में होगें वही तो समझोगें तुम शास्त्र से। एक ही शास्त्र संत पढ़ेगा तो सूफी बनेगा और वही शास्त्र उपद्रवी पढ़ेगा तो आतंकवादी बनेगा।

योद्धाः - कैसे ज्ञात होगा कि दीपक जल गया है?

भगवान - वो तुम्हें स्वयं ही पता चलेगा कोई दूसरा कैसे बताएगा कि तुम्हारे भीतर पीड़ा है या तुम भीतर से उल्लास्ति हो रहे हों।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - गुरु का हाथ कहां तक पकड़ना चाहिए?

भगवान - जो मां-बाप बच्चें की उंगली पकड़कर चलना नही सीखाते उनके बच्चें जल्दी चलना नहीं सीखते। और जो मां-बाप बच्चें की उंगली कभी नहीं छोड़ते उनके बच्चें कभी भी उड़ना नहीं सीखते। **"मौका मिलते ही गुरु की उंगली पकड़ लो और दस कदम चलते ही गुरु की उंगली हमेशा के लिए छोड़ दो"।**

योद्धाः - हम जागेगें कैसे?

भगवान - किसी जागे हुए के कंधे पर चढ कर, उसके सिर पर पांव रखकर।

योद्धाः - क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या 365 प्रकार के जो धर्म है वो नहीं पंहुचा सकते?

भगवान - सभी पंहुचा सकते है लेकिन सभी में तुमने धर्म को ही छोड़ दिया और पहले अक्षर यानी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या 365 को ही पकड़ लिया। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या 365 मुख्य नहीं थें धर्म मुख्य था।

योद्धाः - कौन सा शास्त्र पढ़े?

भगवान - शास्त्र नहीं चाहिए था शास्त्रा चाहिए था। मोहम्मद मिल जाते तुम्हें तो अच्छा था लेकिन तुम्हें कुरान मिली, कृष्ण मिल जाते तुम्हें तो अच्छा था लेकिन तुम्हें गीता मिली।

योद्धाः - तो क्या गीता-कुरान से भी नहीं समझा जा सकता?

भगवान - शायद समझ सकते हो लेकिन पूजा करके नहीं। उस गीता या कुरान से हृदय को जाग्रत करके। लेकिन तुमने पुस्तकों को छाती पर पत्थर की भांति रखा हुआ है बस यही अड़चन है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या परिक्रमा करना धर्म नहीं है?

भगवान - तुम्हारे तथाकथित 365 प्रकार के धर्मों में हर कोई किसी न किसी की परिक्रमा करता है। लोग काबा-काशी में परिक्रमा ही तो करते है। लेकिन परिक्रमा करने से धार्मिक कौन हो पाया है। और मजे की बात तो यह है कि किसी के धर्म में इन परिक्रमाओं के बारे में नहीं लिखा है।

योद्धाः - मेरे जीवन के सुबह कब आएगी?

भगवान - भोर तो तुम्हारी भी हो चुकी है कोई मौला, कोई मुरशिद तुम्हें भी मिल जाए तो तुम भी रक़्स कर लो।

योद्धाः - हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या सभी 365 प्रकार के धार्मिक लोग कथाएं कर रहे है कुछ तो लाभ होता होगा?

भगवान - तुम्हें हुआ? जो कथा कर रहे है उन्हें धन के अलावा कुछ हुआ? हम आज भी कृष्ण, बुद्ध, महावीर, जीसस, नानक, कबीर को याद रखते है। तो कथा वाचक को मरने के 1-2 माह बाद ही क्यों भूल जाते है। क्योंकि कथाओं को सुनने से या सुनाने से कोई जाग्रत नहीं होता।

योद्धाः - गुरुकुल में शास्त्रीय ज्ञान पढ़ाते है उससे कुछ लाभ?

भगवान - हाँ! तुम विद्वान बन जाते हो। लेकिन मैं तो दीवाना बनने की, मस्ताना बनने की, परवाना बनने की बात कर रहा हूँ। मैं तो तुम्हारी आत्मा बदलने की बात, हृदय को जागृत करने की बात कर रहा हूँ।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या संसार छोड़कर परमात्मा मिलता है।

भगवान - नानक संसार में रहते हुए परमात्मा से भरपूर रहें। कबीर संसार में रहे और परमात्मा से लबालब रहें। संसार छोड़ने की धारणा उन मूढ़ों ने तुम्हें दी है जिन्हें परमात्मा का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

योद्धाः - मंदिर-मस्जिद जाने वाला भी तो धार्मिक हो सकता है?

भगवान - लेकिन वो जिस दिन धर्म को उपलब्ध हो जाता है उसी क्षण उसके मंदिर-मस्जिद छूंट जाते है। क्योंकि जो स्वयं मंदिर-मस्जिद हो जाता है वो कंही बाहर के मंदिर-मस्जिद जाएगा।

योद्धाः - परमात्मा को भोग कैसे लगाए?

भगवान - स्वयं खाओं तो वो परमात्मा को ही भोग लग रहा है। और मंदिरों में लगाया गया भोग केवल दिखावा मात्र है और कुछ भी नहीं।

योद्धाः - क्या मरने के बाद नरक भी मिल सकता है?

भगवान - पूरा जीवन तुम होश में नहीं रहे कोई किसी तीर्थ में जा रहा है तो कोई किसी दीन की पूजा कर रहा है। एक दूसरे को मिटाने पर उतारु हो। स्वयं का जीवन ही नहीं दिख रहा है तुम्हें। और कौन सा नया नरक चाहिए तुम्हें।

योद्धाः - क्या सभी जाग नही सकते?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान - हर कोई जाग सकता है लेकिन जो आंखें बंद किए बैठे है और माने बैठे है कि वह जागे हुए है उन्हें जगाने का कोई भी उपाय नहीं है।

योद्धाः - क्या बुद्धि परमात्मा द्वारा दी जाती है?

भगवान - एक बच्चा जो झोपड़ी में पैदा हुआ उसे किसी जज के यहाँ पाल लो और दूसरे बच्चें को जो जज के यहाँ पैदा हुआ उसे किसी झोपड़ी वाले के यहाँ पाल लो इस प्रश्न का उत्तर स्वयं समझ आ जाएगा।

योद्धाः - क्या आत्मा जन्म के समय में आती है तथा मृत्यु के समय में चली जाती है?

भगवान - समुंद्र में मटका डालकर दाएं-बाएं चलाकर देखो कि मटका ही चलता है या समुंद्र भी दाएं-बाएं चलता है।

योद्धाः - यश-अपयश, लाभ-हानि सब विधि हाथ होती है?

भगवान - इसी मूढ़ता भरी सोच ने आज तक भारत को गरीब बनाए रखा है। आखिर यह मूढ़ता कब छोड़ोगें। कभी तो जागना पड़ेगा। क्या अमेरिका का बच्चा भी ऐसे ही सोचता होगा? क्या हमारे देश का पढ़ा लिखा व्यक्ति भी ऐसे ही सोचता होगा या सभी मूढ़ताएं केवल धार्मिक दिखने वालो ने ही पालने का ठेका ले रखा है?

योद्धाः - कई लोग कहते है कि अमुक मंत्र जपकर या ये साधना कर मृत्यु को टाला जा सकता है?

भगवान - आज से पहले भी कई मूढ़ तांत्रिक बने ढ़ोगीं गुरु ऐसे ही प्रलोभन लोगो को देतें थे। तुम उनके जीवन के बारे में पढ़ों सभी 60-65 से पहले ही मर गए। और जापान की औसत उम्र देखों वो बिना साधना के ही 100 पार करते है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या हमे अपने धर्म में पैदा होने पर गर्व करना चाहिए?

भगवान - ऐसी मूढ़ता भरी सोच देकर ही तुम्हारें मूढ़ धर्म गुरु या मूढ़ राजनेता तुम्हें गुमराह करते है और तुम्हें लड़ने-मरने को उकसाते है। तुम बीज बनकर पैदा हुए हो और वृक्ष बन जाओं तो यह शायद गर्व करने की बात हो सकती है लेकिन यहां गर्व करने वाला ही नहीं बचता।

योद्धाः - तंत्र-मंत्र करने वाले क्या कुछ कर सकते है?

भगवान - अगर उनके किसी उपाय से कुछ हो सकता तो सबसे पहले अपना ही भला करते। वो तुमसे दान की उम्मीद क्यों लगाते? **हाँ!** तुम्हारी स्कूल की पुस्तकों के मंत्रों से सभी संभव है।

योद्धाः - हम भविष्य में क्या करेगें क्या यह जन्म से पूर्व ही निंधारित हो जाता है?

भगवान - इसी प्रकार की मूढ़ता भरी सोच के कारण आज भारत गरीब है। मनुष्य चाहें तो आसमा छू ले और मूढ़ता में पड़े तो इतना की धार्मिक जलूसों में जान देने की सोच लें। यह किसी के हाथ नहीं है सभी तुम्हारें हाथ है लेकिन जागे हुए व्यक्ति के हाथ।

योद्धाः - सुना है 100 वर्ष पूर्व मंदिरों में इतनी मूर्तियां नहीं होती थी आज ज्यादा क्यूं है?

भगवान - समय के साथ-साथ मूढ़ताएं भी बदलती है। काबा में मोहम्मद से पहले 365 दिनों के लिए 365 मूर्तियां होती थी। मोहम्मद ने समझाया कि वो खुदा एक है यह दुकान क्यूं सजा रखी है। अगर पूजना ही है तो किसी एक को पूज लो। और तुम्हारें गुरुओं ने समझाया कि एक ब्रह्म की जगह अनेक मूर्तियों को पूज लो। तुम अपनी बुद्धि से निणर्य करों कि क्या ठीक है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या किसी नदी के स्नान से पाप धुलते है या पुण्य मिलता है?

भगवान - अगर ऐसा सम्भव होता तो संसार कब का धार्मिक बन गया होता। और हर धर्म में ऐसे स्नान विद्यमान होते है। लेकिन इस प्रकार के स्नान से पाप-पुण्य का कुछ भी लेना देना नही होता। **"हमें भी पता है जन्नत की हकीकत यारों मन को बहलाने को यह ख्याल अच्छा है"।**

योद्धाः - सरकारे या कुछ लोग अंधविश्वास क्यो फैलाते है?

भगवान - अंधविश्वास वही फैलाएगा, जिसे आपकी गुलामी पसन्द है। और ज्ञान वही देगा जिसे आपकी आजादी प्यारी है।

योद्धाः - क्या किसी पत्थर की परिक्रमा करके धर्म कमाया जा सकता है?

भगवान - काश धर्म इतना ही सस्ता होता तो बुद्ध-महावीर को यूं ही भटकना नहीं पड़ता। नानक-कबीर को एक-एक पंक्ति बोलकर तुम्हें समझाना नहीं पड़ता।

योद्धाः - बुद्ध स्वयं शास्त्र क्यों नहीं लिखते? वो सत्य पुस्तकों में क्यों नहीं उतारते?

भगवान - सत्य कभी भी पुस्तकों में उतारा नहीं जा सकता। सत्य तो आपको अपने गर्भ में पैदा करना होता है तो ही वह आपके काम का होता है।

योद्धाः - धर्म मनुष्य को कहां ले जाता है क्या करने की कोशिश करता है?

भगवान - केवल स्वयं की याद दिलाने की कोशिश करता है। क्योंकि यहां मनुष्य सभी को याद रखता है सिवाय स्वयं के। और यही दुख का कारण है। और जिन्हें धर्म मिल जाता है वो बुद्ध पुरुष यहीं सुखी हो जाते है।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः - क्या केवल हिन्दू ही धर्म है और बाकि सम्प्रदाय?

भगवान - अब सरकारें ही मूढ़ धर्म गुरुओं को बढ़ावा दे रही है तो मूढ़ तो मूढ़ता करेगें ही। धर्म न हिन्दू होता है न ही मुस्लमान। यह सभी राजनीति के अखाड़ें है। धर्म तो एक आग का नाम है वो तो तुम्हारें भीतर जब जलेगी तभी कुछ जान पाओगें। वो तो तुम मिटोगें तभी ज्ञात होगा कि वो क्या होता है।

योद्धाः - धन के लिए किस देवी-देवता की पूजा करें?

भगवान - अपनी बुद्धि को साफ करों और पढ़ लिखकर कुछ काम करों।

योद्धाः - आत्म दशर्न का आसान उपाय?

भगवान - **“तू मरेगा तभी तो तरेगा”।**

योद्धाः - हम अपने अंहकार को कैसे मारे?

भगवान - **“मरो हे जोगी मरो, मरो मरन है मीठा। उस मरनी मरो जिस मरनी गोरख मर दीठा”॥**

योद्धाः - तो क्या मंदिर की मूर्ति में भगवान नहीं है?

भगवान -जानते तो तुम भी हो। लेकिन मैं आज तक पिछले 50 वर्ष से गलत हूँ यह मानने को तैयार नहीं होते। बताओं अगर मंदिर में आग लगे तो मूर्ति को बचाओगें या अपने बेटे को?

योद्धाः - हमारे देश में शोषित वर्ग ज्यादा है फिर भी वो लोग क्रांति क्यो नहीं करते?

parmatmana the ultimate wisdom

भगवान - क्योंकि क्रांति वो कर सकता है जो अपने फैसले स्वयं लेने का दम रखता हो। वो दबा कुचला वर्ग हर प्रकार से सरकार या शोषण करने वाले के उपर आश्रित है। फिर वो क्रांति कैसे करेगा। **और मैं वही तो आवाज उठा रहा हूँ शायद लोगों को समझ आ जाए।**

योद्धाः - खुदा से मिलना कैसे संभव है?

भगवान - अपनी आत्मा की आग इतनी प्रज्वलित करो कि वहां उस आग के अलावा कुछ भी न बचे। बस वो शुद्ध आग ही तुम्हे परमात्मा से मिला देगी।

योद्धाः - ऐसा क्या है कि भारत के दबे कुचले लोग स्वयं को मुक्त नहीं कर पा रहे है?

भगवान - जब तक वो उन पुस्तकों को जूतें के नीचे नही रखेगें जो पुस्तकें उन्हें नीच कह रही है तब तक वो मुक्त हो नहीं सकते। जो पुस्तकें उन्हें नीच कह रही है वो उन्हीं पुस्तकों को धार्मिक मान कर पूज रहे हैं तो वो स्वयं को मुक्त कैसे कर पाएगें। केवल अगर उन्हें हम किसी तरह शिक्षित कर पाए तो वो स्वयं ही अपनी जंजीरों को तोड़ देगें। लेकिन सरकारें शायद यह भी नहीं चाहती इसलिए उनके लिए शिक्षा के द्वार भी बंद करती जा रही है।

योद्धाः - क्या दुनिया में कोई ईश्वर नामक व्यक्ति नहीं है?

भगवान - ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं केवल डर और अज्ञान से पैदा की गई एक धारणा है। लेकिन जैसे ही आप प्रबुद्ध हो जाते हो तो कोई भी अर्थ नहीं रह जाता ईश्वर का।

योद्धाः - क्या तुम धर्मो की जड़ें नही उखाड़ रहे हो?

भगवान - तुम सभी ने धर्मो को बचाया है और इंसानों को मार दिया है मैं इंसान बचा रहा हूँ धर्म मिट रहा है तो मिटने दो। इंसान बच गया तो अपने लिए धर्म खोज ही लेगा और अगर धर्म बच भी गया और इंसान ही मिट गया तो वो धर्म अपने लिए इंसान कहां से खोजेगा।

योद्धाः - क्या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि होना धर्म नहीं होता?

भगवान - धर्म की परिभाषा क्या है? स्वयं अपने बोध से निणर्य करों। सुखी होना, आनंदित होना, मस्त होना, संतुष्ठ होना, जीवन में नृत्य का, उत्सव का घटित होना या हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बोध, जैन होना?

योद्धाः - भारत में इतने महापुरुष आए लेकिन फिर भी भारत सम्पन्न क्यों नहीं हो पाया?

parmatmang
the ultimate wisdom

भगवान - मनुष्य ने अपना व्यक्तित्व ही ऐसा बना लिया है कि उसके हाथ में जो भी दो वो मैला हो ही जाता है। इसमें दोष केवल तुम्हारा स्वयं का है। महापुरुषों ने तो खूब समझाया कि मुक्त हो जाओं और इसी जीवन को स्वर्ग बना लो लेकिन तुमने उसी मुक्ति की डोर से स्वयं को बांध लिया।

योद्धाः - तुम कौन सा नया मार्ग दिखा रहे हों?

भगवान - तुम्हारे पास एक पुरानी सड़ी-गली धारणा है कि तुम पुराने जन्मों के पापी हो और यहां मृत्यु लोक में अपने बुरे कर्मों का फल भुगतने आए हों। और यहां दान-दक्षिणा देकर, जप-तप कर तुम मरने के बाद स्वर्ग में सुखी होगे। आज मैं तुम्हें एक नया विचार दे रहा हूँ **"कि तुम ही परमात्मा हो, खुदा हो। और यह देह तुम्हें सुख भोगने के लिए आनंदित रहने के लिए मिली है। तुम्हें जो अच्छी लगे उसे मान लो"।**

योद्धाः - सभी मनुष्य आर्थिक रुप से सम्पन्न क्यों नही हो पाते?

भगवान - आज संसार में इतना पैसा है कि अगर पूरी दुनिया एक परिवार बन कर रहे, न कहीं बार्डर हो, न सेना, न जंगी जहाज, न न्यूकलर बम्ब। तो जितना रुप्या हम संसार भर में रक्षा बजट पर व्यर्थ करते है उतने में हर व्यक्ति सुखी और सम्पन्न हो सकता है। लेकिन यह मूर्खता कर रहे है सभी देशों के राजनीतिक पार्टीयों के लीडर और साथ ही साथ सभी धर्मो के धर्म गुरु।

योद्धाः - तुम रोटी कंहा से कहते हो? क्या एक नई धर्म की दुकान खुलने जा रही है? तुम्हारा हमें समझाने का उद्देश्य क्या है?

भगवान – **"तू जाग जा और तू भाग जा"।**

parmatmana
the ultimate wisdom

"जब तक तू बचता रहेगा, तब तक तू बंधा रहेगा। जब तू मरेगा, तभी तो तू तरेगा"।

"हर प्रश्न में छिपा है एक उत्तर और हर उत्तर में छिपा है एक अंत"।

यह पुस्तक एक साधारण संवाद नहीं है, यह आत्मा और अहंकार के बीच की संघर्ष कथा है। यह उन प्रश्नों का उत्तर है जिन्हें हम पूछते तो हैं, लेकिन सुनना नहीं चाहते। "तू मरेगा तभी तो तरेगा" यह वाक्य केवल किसी शरीर की मृत्यु की बात नहीं करता, यह उस 'अहंकार', 'मोह', 'डर' और 'स्वार्थ' की मृत्यु की मांग करता है जिसने हमारे भीतर के सत्य को कैद कर रखा है।

प्रश्न-उत्तर की इस शैली में आप न केवल विचार पाएंगे, बल्कि एक आईना भी पाएंगे जिसमें झांकना सरल नहीं, पर एक बार झांक लिया, तो खुद को देखे बिना रह भी नहीं सकेंगे। यदि आप तैयार हैं मरने को, बदलने को, और सच से टकराने को, तो यह पुस्तक आपके लिए है। "सवाल तो सभी पूछते हैं, पर उत्तर उन्हीं को मिलते हैं जो भीतर मरने का साहस रखते हैं।"

यह पुस्तक केवल शब्दों का संग्रह नहीं है यह जीवन के सबसे कठिन, सबसे गहरे और सबसे कड़वे प्रश्नों का सामना है। यह एक यात्रा है 'मैं' से 'हम' तक, स्वार्थ से समर्पण तक, और अहंकार से आत्मा तक। यह रचना ना किसी धर्म का प्रवचन है, ना किसी संप्रदाय का झंडा।

यह एक स्वतंत्र, निडर, और पारदर्शी संवाद है जो मनुष्य को स्वयं से मिलाने का प्रयास करती है। हर पन्ने पर आपको मिलेंगे ऐसे प्रश्न जो कभी आपने अपने भीतर दबा दिए थे, और मिलेंगे ऐसे उत्तर जो न तो किताबों में हैं, न प्रवचनों में बस आपकी तारी हुई चेतना में छिपे हैं।

यह पुस्तक बताती है कि सत्य कभी बाहर नहीं मिलता वह भीतर मरने के बाद ही प्रकट होता है। तू मरेगा तभी तो तरेगा एक आवाहन है मरने का, छोड़ने का, और ऊपर उठने का। यदि

parmatmana the ultimate wisdom

आप साहसी हैं, यदि आप थमे नहीं हैं, यदि आप भीतर के अंधेरे को देखने का साहस रखते हैं तो यह पुस्तक आपकी चेतना के द्वार पर दस्तक देगी।

यह पढ़ने के लिए नहीं, जीने के लिए है।

parmatmana
the ultimate wisdom